लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

आँचल

18वाँ अंक (जुलाई – दिसंबर 2022)

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई – 400051
O/o Director General of Audit (Shipping), Mumbai - 400051

आँचल

विभागीय गृह-पत्रिका

अंक - 18

आँचल परिवार

संरक्षक

श्री गुलजारी लाल

महानिदेशक

दिग्दर्शन

सुश्री अनिता सिंह

निदेशक (प्रतिवेदन)

प्रबंध संपादक

श्री ज्योतिमय बाइलुंग

उप निदेशक (प्रशासन)

संपादकीय परामर्श

श्री पियुष रामटेके, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री अमित कुमार सिन्हा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक

श्री जय राम सिंह, कनिष्ठ अनुवादक

स्वत्व-त्याग (डिस्क्लेमर) - "आँचल" पत्रिका का मुख्य उद्देश्य राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार है। इसमें निहित लेख, कवितायें तथा विचार इत्यादि मूलतः लेखकों के अपने हैं और यह आवश्यक नहीं है कि कार्यालय इनसे सहमत हो।

प्राक्कथन

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई अपनी विभागीय अर्द्धवार्षिक गृह-पत्रिका **“आँचल”** का नियमित प्रकाशन कर रहा है जो हर्ष की बात है। मुझे इस बात का संतोष है कि कार्यालय के कार्मिकों को राजभाषा हिंदी में लेखन की प्रेरणा देती हुई यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार और प्रसार में अपना योगदान दे रही है।

भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग के भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अवस्थित कार्यालयों से पत्रिका के पिछले अंकों के संबंध में बहुत ही उत्साहजनक और प्रशंसात्मक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुई हैं जो इस पत्रिका की उत्तरोत्तर बढ़ती स्वीकार्यता को दर्शाता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका इसी तरह राजभाषा हिंदी के प्रोत्साहन में महत्वपूर्ण योगदान करती रहेगी।

मैं संपादक मण्डल सहित कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूँ जिन्होंने पत्रिका के इस अंक को मूर्त रूप प्रदान करने में अपना अमूल्य योगदान दिया है। मैं हृदय से कामना करता हूँ कि **“आँचल”** इसी सहजता एवं सरलता से हिंदी का प्रचार-प्रसार करती रहे एवं निरन्तर प्रगति करती रहे।

गुलजारी लाल

महानिदेशक

दिग्दर्शन

इस कार्यालय की विभागीय हिंदी गृह-पत्रिका **"आँचल"** का 18वाँ अंक पाठकों के बीच देखकर सुखद अनुभूति हो रही है। लगातार काम के दवाबों के बीच यह पत्रिका हमारे कार्मिकों को रचनात्मक लेखन के लिए एक सार्थक मंच प्रदान करती है। इससे कार्मिकों के बीच विचारों का लगातार परिशोधन और परिमार्जन होता है। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु अपनी बहुमूल्य रचनाएँ प्रदान करने वाले सभी कर्मचारी एवं अधिकारी प्रशंसा के पात्र हैं। मैं आशा करती हूँ कि पत्रिका कार्मिकों को राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए उनके मनोबल को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। पत्रिका के संपादन से जुड़े सभी कार्मिकों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

पत्रिका के निरंतर प्रगति हेतु शुभकामनाओं सहित।

अनिता सिंह

निदेशक (प्रतिवेदन)

संदेश

विभागीय गृह-पत्रिकाओं की अवधारणा कार्मिकों के बीच रचनात्मक लेखन एवं अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करना और एक सार्थक माध्यम प्रदान करना है। इस कार्यालय द्वारा प्रकाशित की जा रही विभागीय गृह-पत्रिका **"आँचल"** लगातार अपने इन उद्देश्यों को पूरा करने में सफल होती रही है और मुझे आशा ही नहीं, वरन् पूर्ण विश्वास है कि यह अपने उद्देश्यों को पूर्ण करने में आगे भी सफल रहेगी। कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा पत्रिका-प्रकाशन हेतु रचनायें प्रस्तुत करने में जो उत्साह दर्शाया गया है वह अत्यंत प्रशंसनीय है। रचनाधर्मिता के माध्यम से राजभाषा हिंदी का प्रचार एवं प्रगति सुनिश्चित करना ही इस पत्रिका का मूल उद्देश्य है।

आशा करता हूँ कि भविष्य में भी कार्यालय के सभी कर्मचारी पत्रिका के प्रकाशन में अपना अमूल्य योगदान देंगे एवं अपने कार्य से भी संबंधित लेख आदि लिखकर पत्रिका को उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक बनाने का प्रयास करेंगे।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

ज्योतिमय बाइलुंग

उप निदेशक (प्रशासन)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	प्राक्कथन	श्री गुलजारी लाल	2
2.	दिग्दर्शन	सुश्री अनिता सिंह	3
3.	संदेश	श्री ज्योतिमय बाइलुंग	4
4.	अनुक्रमणिका		5
5.	संपादकीय	श्री जय राम सिंह	6
6.	भारत के महान स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति श्रद्धांजलि श्रृंखला	हिंदी प्रकोष्ठ	8-10
7.	जो लौट के घर न आए	हिंदी प्रकोष्ठ	11-13

पद्य खण्ड

क्र.सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	नेताजी, तुम अमर हो आज भी	सुश्री रितु मोटवानी	14
2.	प्रार्थना	श्रीमती वीणा शिरशाट	15
3.	जय जय कम्प्युटर महाराज	श्री जय राम सिंह	16
4.	खूबसूरत संसार	सुश्री प्रतिभा वर्मा	17
5.	कहाँ पहुँच गए हम	श्री दीपेन्द्र कुमार राज	18
6.	मस्त बचपन	सुश्री रितु मोटवानी	19
7.	गीतिका	श्री जय राम सिंह	20
8.	ग़ज़ल	श्री हरीश मीणा	21

गद्य खण्ड

क्र.सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	रास्ते (ललित निबंध)	श्री जिज्ञासु पंत	22
2.	परिधान और सोच (लघुकथा)	श्री प्रवीण नाफाडे	23
3.	मेढ़क और चूहा (लघुकथा)	श्री सुरेश कुमार	24
4.	मन के हारे हार है, मन के जीते जीत (निबंध)	श्री तरुण बजाज	25-26
5.	कंठस्थ 2.0 : राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए एक क्रांतिकारी कदम (निबंध)	श्री जय राम सिंह	27 - 31
6.	पकवान (निबंध)	श्रीमती नयना केळसकर	32
7.	जलवायु परिवर्तन के प्रभाव (निबंध)	श्री प्रवीण नाफाडे	33 - 34
8.	जीवन और नौकायन (निबंध)	श्री अंकित आज़ाद	35 - 37
9.	मुंबई दर्शन (निबंध)	श्री अजीत कुमार	38 - 41

अन्य

क्र.सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	राजभाषा अधिनियम, 1963 तथा राजभाषा नियम, 1976 संबंधी विशिष्ट प्रावधान	हिंदी प्रकोष्ठ	42 - 47
2.	आपके पत्र : आपकी प्रतिक्रियाएँ	कार्यालयों / पाठकों से	48 - 50
3.	चित्र बोलते हैं	हिंदी प्रकोष्ठ	51 - 56
4.	राजभाषा हिंदी की प्रगति की समीक्षा	हिंदी प्रकोष्ठ	57 - 58
5.	विविधा	हिंदी प्रकोष्ठ	59
6.	श्रद्धांजलि	हिंदी प्रकोष्ठ	60

विश्व हिंदी दिवस एवं राष्ट्रीय हिंदी दिवस

जय राम सिंह
क. अनुवादक

अपनी भाषा के प्रति लगाव और अनुराग राष्ट्र प्रेम का ही एक रूप है। भारत कई राज भाषाओं और लिपियों से समृद्ध देश है। यहां कई सारी भाषाएं बोली जाती हैं। लेकिन देश के एक भाग को दूसरे से जोड़ने का काम हिंदी भाषा ही करती है। हिंदी ने सभी भारतवासियों को एक सूत्र में पिरोकर हमेशा अनेकता में एकता की भावना को साबित किया है।

भले ही अंग्रेजी का प्रचलन बढ़ गया हो, लेकिन हिंदी अधिकतर भारतीयों की मातृभाषा है। हालांकि भारत में हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं मिला है, लेकिन राजभाषा के तौर पर हिंदी की विशेष संवैधानिक पहचान है। भारत के साथ ही विदेशों में बसे भारतीयों को भी हिंदी भाषा ही एकजुट करती है। हिंदी हिंदुस्तान की पहचान भी है और गौरव भी। हिंदी के माध्यम से दुनिया भर के तमाम देशों में बसे भारतीयों को एक सूत्र में बांधने के लिए विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है। हर साल विश्व हिंदी दिवस 10 जनवरी को मनाया जाता है। वहीं भारत में हिंदी दिवस 14 सितंबर को मनाया जाता है। दो अलग-अलग तिथियों को हिंदी दिवस मनाने का क्या कारण है ? विश्व हिंदी दिवस और राष्ट्रीय हिंदी दिवस में क्या अंतर है ? आइए, हम इस अंतर और महत्व को विस्तार से समझें।

अक्सर लोग असमंजस में होते हैं कि हिंदी दिवस की सही तिथि क्या है। दरअसल 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाते हैं और 14 सितंबर को राष्ट्रीय हिंदी दिवस मनाते हैं। दोनों का उद्देश्य हिंदी का प्रसार करना ही है, लेकिन दोनों में एक बड़ा अंतर भौगोलिक स्तर पर इसे मनाने का है। दोनों की स्थापना दिवस को लेकर भी कुछ अंतर है। राष्ट्रीय हिंदी दिवस भारत में हिंदी को आधिकारिक दर्जा मिलने की खुशी में मनाते हैं, वहीं विश्व हिंदी दिवस दुनिया में हिंदी को वही दर्जा दिलाने के प्रयास में मनाया जाता है।

पहला विश्व हिंदी दिवस और विश्व हिंदी सम्मेलन 10 जनवरी 1975 को राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के सहयोग से महाराष्ट्र के नागपुर में आयोजित हुआ था। इस सम्मेलन का उद्घाटन तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी ने किया था। यह सम्मेलन अंतरराष्ट्रीय स्तर का था, जिसमें ३० देशों के 122 प्रतिनिधि शामिल हुए थे। इस सम्मेलन का उद्देश्य हिंदी का प्रसार-प्रचार करना था। बाद में यूरोपीय देश नॉर्वे में स्थित भारतीय दूतावास ने पहली बार भारत के बाहर विश्व हिंदी दिवस मनाया था। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए साल 2006 में प्रति वर्ष 10 जनवरी को हिन्दी दिवस मनाने की घोषणा की थी। तब से विश्व हिंदी दिवस इसी तिथि यानी 10 जनवरी को मनाया जाने लगा। विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर विश्व के किसी प्रमुख हिंदी-भाषी शहर अथवा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए महत्वपूर्ण शहर में विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया जाता है। विश्व हिन्दी सम्मेलन हिन्दी भाषा का सबसे बड़ा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन है, जिसमें विश्व भर से हिन्दी विद्वान, साहित्यकार, पत्रकार, भाषा विज्ञानी, विषय विशेषज्ञ तथा हिन्दी प्रेमी जुटते हैं। प्रारम्भ में इसका आयोजन हर चौथे वर्ष किया जाता था लेकिन अब यह अन्तराल घटाकर तीन वर्ष कर दिया गया है। अब तक ग्यारह विश्व हिन्दी सम्मेलन हो चुके हैं – नागपुर, मॉरीशस, नई दिल्ली, पुन: मॉरीशस, त्रिनिडाड व टोबेगो, लन्दन, सूरीनाम, न्यूयॉर्क, जोहांसबर्ग, भोपाल

और मॉरीशस में। बारहवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन फिजी में प्रस्तावित है। अब तक के विश्व हिंदी सम्मेलनों में लिए गए कुछ महत्वपूर्ण निर्णय एवं उनका क्रियान्वयन इस प्रकार है:-

1. वर्धा, महाराष्ट्र में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना।

2. मॉरीशस में विश्व हिन्दी सचिवालय की स्थापना।

3. एक अंतरराष्ट्रीय हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन किया जाए जो भाषा के माध्यम से ऐसे समुचित वातावरण का निर्माण कर सके जिसमें मानव विश्व का नागरिक बना रहे और अध्यात्म की महान शक्ति एक नए समन्वित सामंजस्य का रूप धारण कर सके।

4. अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिन्दी के विकास और उन्नयन के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक स्थायी समिति का गठन जिसमे देश-विदेश के लगभग 25 प्रमुख विद्वान सदस्य होते हैं।

5. कैरेबियन सागर के तटवर्ती देशों (वेस्टइंडियन देशों) में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए कैरेबियन हिंदी परिषद की स्थापना।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता और उसके उन्नयन के लिए किए जा रहे प्रयासों के परिणामस्वरूप संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी अपनी कुछ सूचनाओं के विश्व की अन्य भाषाओं के अलावा हिंदी में भी प्रकाशित करना शुरु कर दिया है।

भारत में हिंदी दिवस 14 सितंबर को मनाया जाता है। इस दिन को मनाने की शुरुआत आजादी के तुरंत बाद हुई। 14 सितंबर 1946 को संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी को भारत की आधिकारिक भाषा स्वीकार किया। तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की सरकार ने संसद में 14 सितंबर को हिंदी दिवस के तौर पर मनाने की घोषणा की। आधिकारिक तौर पर पहला राष्ट्रीय हिंदी दिवस 14 सितंबर 1953 को मनाया गया।

भारत की संविधान सभा ने हम सबको यह संवैधानिक और प्रशासनिक उत्तरदायित्व सौंपा है कि हम संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 के अनुसार राजभाषा हिंदी का अधिकतम प्रयोग करते हुए प्रचार प्रसार बढ़ाएं। अनुच्छेद 351 के अनुसार संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे। इससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। साथ ही उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और मूल्यों को आत्मसात् करें।

हिंदुस्तान के लिए देवनागरी लिपि का ही व्यवहार होना चाहिए, रोमन लिपि का व्यवहार यहां हो ही नहीं सकता - महात्मा गाँधी

स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि

(हमारी विभागीय गृह-पत्रिका "**आँचल**" का यह नियमित स्तम्भ है। इस अंक में हम देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेकर अपना सर्वस्व न्योछावर कर देनेवाले वीर सपूतों के बलिदानों का स्मरण कर उन्हें कृतज्ञतापूर्वक श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। आज हम सभी आजाद देश के नागरिक हैं क्योंकि बीते हुए कल में इन असंख्य वीर सेनानियों ने हमारे '**आज**' को सुखमय बनाने के लिए अपने '**आज**' की आहुति दे दी थी। इस स्तंभ में हम स्वतंत्रता के वैसे नायकों/नायिकाओं की गाथाएँ सामने लाने का प्रयास करते हैं जिनकी अधिक चर्चा नहीं होती या बिन्कुल ही नहीं होती है। प्रस्तुत अंक में देश की कुछ वीरांगनाओं की गाथाओं को इकट्ठा कर उन्हें आप सुधी पाठकों तक पहुँचाने का हमारा प्रयास है – सम्पादक)

1. प्रतिभा वाडेदार (1911-1932)

प्रीतिलता वाडेदार का जन्म 5 मई, 1911 को चटगांव (आधुनिक बांग्लादेश) में हुआ था। बचपन से ही प्रीतिलता राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत थीं। युवावस्था आते-आते उनकी सोच विशुद्ध क्रांतिकारी हो चुकी थी। उन्होंने देश से अँग्रेजों को मार भगाने का मन ही मन संकल्प ले लिया था। प्रीतिलता हथियार उठाने और क्रांतिकारी गतिविधियों में संलग्न होने वाली पहली महिलाओं में से एक थीं। **दीपाली संघ** एक क्रांतिकारी संगठन था जो महिलाओं को युवा होने पर युद्ध प्रशिक्षण प्रदान करता था। **प्रीतिलता** इसमें शामिल हो गईं। वैसे वह **सूर्य सेन** की भारतीय क्रांतिकारी सेना में शामिल होने के लिए उत्सुक थीं, लेकिन उन्हें विरोध का सामना करना पड़ा क्योंकि इसमें पुरुषों का वर्चस्व था।

लेकिन अपनी सहेली **कल्पना दत्त** के साथ उन्होंने इस समूह का सदस्य बनने के लिए कठोर प्रशिक्षण लिया ताकि वीरता के मामले में वे कहीं भी पुरुषों से पीछे न रह जाएँ। **चटगांव शस्त्रागार छापे** के बाद, जिसमें **इंडियन रिनोल्युशनरी आर्मी** (आई आर ए) के अधिकांश नेताओं को पकड़ लिया गया था, प्रीतिलता ऐसी एकमात्र क्रांतिकारी बची थीं जिनमें नेतृत्व-क्षमता कूट-कूट कर भरी थी। वे उस समय केवल 21 वर्ष की थी जब उन्हें 7-10 युवाओं के एक समूह की कमान दी गई थी। इस समूह ने पहाड़तली यूरोपीय क्लब (यूरोपीय लोगों के लिए एक सामाजिक क्लब) की घेराबंदी की थी। इस क्लब को मुख्य रूप से इसकी नस्लीय और भेदभावपूर्ण प्रथाओं के कारण निशाना बनाया गया था। इस क्लब के गेट पर एक संदेश लिखा था - "**कुत्तों और भारतीयों को अनुमति नहीं है**।" प्रीतिलता को यह अपमान स्वीकार्य न था। वे जब भी इस संदेश को देखतीं, उनका खून खौलने लगता। 23 सितंबर 1932 की रात को, एक पुरुष के वेश में उन्होंने साहसपूर्वक हमले का नेतृत्व किया। इस दौरान हुई भीषण गोलीबारी में उनके पैर में गोली लग गई, जिससे वह वहाँ से सुरक्षित भाग नहीं पाई। अँग्रेज कमांडर ने उन्हें आत्मसमर्पण करने को कहा। एक वीरांगना कभी आत्मसमर्पण नहीं करती। प्रीतिलता जी ने साइनाइड की गोली निगलने का फैसला किया और इस तरह अपने देश के स्वाभिमान की रक्षा में उन्होंने अपना सर्वोच्च बलिदान कर दिया। (**आँचल परिवार अमर शहीद सुश्री प्रीतिलता वाडेदार जी को शत्-शत् नमन करता है।**)

2. **सुनीति चौधरी**

सुनीति चौधरी का जन्म 22 मई 1917 को बंगाल (वर्तमान बांग्लादेश) के **कोमिला** में बंगाली कायस्थ परिवार में **उमाचरण चौधरी** और **सुरसुंदरी चौधरी** के घर हुआ था। सुनीति चौधरी **उल्लासकर दत्ता** की क्रांतिकारी गतिविधियों से प्रभावित थी, जो कोमिला में ही रहते थे। उन्हें एक अन्य शिष्य **प्रफुल्लनलिनी ब्रह्मा** द्वारा **जुगांतर पार्टी** में भर्ती किया गया था। वह **त्रिपुरा जिला छत्री संघ** की सदस्य भी थीं। सुनीति चौधरी को 6 मई 1931 को आयोजित त्रिपुरा जिला छात्र संघ के वार्षिक सम्मेलन में **महिला स्वयंसेवक कोर** के **कप्तान** के रूप में चुना गया था।

इस दौरान, वह **'मीरा देवी'** के उपनाम से जानी जाती थी। उन्हें "**आग्नेयास्त्रों के संरक्षक**" के रूप में चुना गया था और वह महिला सदस्यों (छत्री संघ की) को लाठी, तलवार और खंजर खेलने में प्रशिक्षित करने की प्रभारी थीं। 14 दिसंबर 1931 को **सुनीति चौधरी** और **शांति घोष** (दोनों उस समय 16 वर्ष की थीं), एक ब्रिटिश नौकरशाह और कोमिला के जिला मजिस्ट्रेट **चार्ल्स जेफ्री बकलैंड स्टीवंस** के कार्यालय में इस बहाने से घुस गए कि वे अपने सहपाठियों के बीच तैराकी प्रतियोगिता की व्यवस्था करने के लिए एक याचिका पेश करना चाहते थे। स्टीवंस जब दस्तावेज़ देख रहा था उसी समय घोष और चौधरी ने शॉल में छिपाए गए अपने स्वचालित पिस्तौल को निकाल लिया और गोली मारकर स्टीवेंस की हत्या कर दी। तुरंत ही दोनों लड़कियों को हिरासत में ले लिया गया और स्थानीय ब्रिटिश जेल में कैद कर दिया गया। फरवरी 1932 में, शांति घोष और सुनीति चौधरी कलकत्ता में अदालत में पेश हुए। नाबालिग होने के कारण दोनों को 10 साल की जेल की सजा सुनाई गई। समकालीन पश्चिमी पत्रिकाओं ने हत्या को "**अर्ल ऑफ विलिंगडन द्वारा एक अध्यादेश के खिलाफ भारतीयों के आक्रोश**" के संकेत के रूप में चित्रित किया था। इस अध्यादेश ने भारतीयों के नागरिक अधिकारों को दबा दिया था जिसमें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता भी शामिल थी। भारतीय सूत्रों ने इस हत्या को शांति घोष और सुनीति चौधरी की "**ब्रिटिश जिला मजिस्ट्रेटों के दुर्व्यवहार**" के जवाब के रूप में वर्णित किया जिन्होंने भारतीय महिलाओं का बलात्कार करने के लिए सत्ता के अपने पदों का दुरुपयोग किया था।

फैसला सुनाए जाने के बाद राजशाही जिले में पुलिस की खुफिया शाखा को एक व्यक्ति मिला जो घोष और चौधरी की राष्ट्रवादी नायिकाओं के रूप में प्रशंसा कर रहा था। पोस्टर में लिखा था, "**तुम अब आजादी और प्रसिद्धि की वर्तमान हो**"। उस व्यक्ति ने रॉबर्ट बर्न्स की कविता "स्कॉट्स वा हे" की पंक्तियों के साथ दो लड़कियों की तस्वीरें प्रदर्शित कीं:-**"अत्याचारी हर दुश्मन में दिखता हैं ! / स्वतंत्रता अब सिर्फ एक ही झटका है!"** रिहाई के बाद सुनीता चौधरी ने पढ़ाई की और एमबीबीएस की परीक्षा उत्तीर्ण करके डॉक्टर बन गई। 1947 में सुनीता चौधरी ने ट्रेड यूनियन नेता प्रद्योत कुमार घोष से विवाह कर लिया। इस जाँबाज वीराँगना ने 12 जनवरी 1988 को अपनी अंतिम साँस ली।

(आँचल परिवार त्याग, साहस और बलिदान की अदम्य मूर्ति श्रीमती तारा रानी श्रीवास्तव को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।)

3. कल्पना दत्त

कल्पना दत्ता का जन्म श्रीपुर में एक वैद्य परिवार में हुआ था, श्रीपुर ब्रिटिश भारत के बंगाल प्रांत में चटगांव जिले का एक गांव था जो अब बांग्लादेश के बोलखली उपजिला में स्थित है। उनके पिता **बिनोद बिहारी दत्तागुप्ता** एक सरकारी कर्मचारी थे। चटगांव में 1929 में मैट्रिक की परीक्षा पास करने के बाद वह कलकत्ता चली गईं और विज्ञान का अध्ययन करने के लिए **बेथ्यून कॉलेज** में दाखिला लिया। जल्द ही वह **छत्री संघ** (**महिला छात्र संघ**) में शामिल हो गईं जो एक अर्द्ध-क्रांतिकारी संगठन था जिसमें बीना दास और **प्रीतिलता वाडेदार** भी सक्रिय सदस्य थीं।

चटगांव शस्त्रागार का छापा 18 अप्रैल 1930 को किया गया था। कल्पना दत्त मई 1931 में **सूर्य सेन** के नेतृत्व में सशस्त्र प्रतिरोध समूह "**इंडियन रिपब्लिकन आर्मी**" की चट्टाग्राम शाखा में शामिल हो गईं।

सितंबर 1931 में सूर्य सेन ने प्रीतिलता वाडेदार के साथ उन्हें चटगांव में यूरोपीय क्लब पर हमला करने का काम सौंपा। हमले से एक हफ्ते पहले उन्हें उस क्षेत्र की टोह लेते हुए गिरफ्तार किया गया था। जमानत पर रिहा होने के बाद वह छिप गई थी। 16 फरवरी 1933 को पुलिस ने गैराला गांव में उनके छिपने की जगह को घेर लिया। इस छापेमारी के दौरान क्रांतिकारी सूर्य सेन को गिरफ्तार कर लिया गया, लेकिन कल्पना भागने में सफल रही। सूर्य सेन को छुड़ाने के लिए उन्होंने जेल पर विस्फोटकों से बम बरसाने की कोशिश की लेकिन नाकाम रही। कल्पना को आखिरकार 19 मई 1933 को गिरफ्तार कर लिया गया। चटगांव शस्त्रागार छापे मामले के दूसरे पूरक मुकदमे में कल्पना को "**जीवन के लिए परिवहन**" की सजा सुनाई गई थी। उन्हें 1939 में रिहा किया गया था।

कल्पना दत्ता ने 1940 में कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गईं। उन्होंने 1943 के बंगाल के भीषण अकाल और बंगाल के विभाजन के दौरान एक राहत कार्यकर्ता के रूप में कार्य किया। बाद में वह भारतीय सांख्यिकी संस्थान में योगदान देने लगी जहाँ उन्होंने अपनी सेवानिवृत्ति तक काम किया। 8 फरवरी 1995 को कलकत्ता में उनका निधन हो गया।

1943 में उन्होंने भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के तत्कालीन महासचिव पूरन चंद जोशी से विवाह कर लिया। चटगांव शस्त्रागार छापा पर आधारित दो फिल्में अब तक बन चुकी हैं। 2010 में एक हिंदी फिल्म "**खेलें हम जी जान से**" में दीपिका पादुकोण ने **कल्पना दत्ता** के रूप में और अभिषेक बच्चन ने **सूर्य सेन** के रूप में अभिनय किया, जो चटगांव शस्त्रागार छापे और उसके बाद के दौर से संबंधित थी। इसी विद्रोह पर आधारित एक और फिल्म "**चटगाँव**" 12 अक्टूबर 2012 को रिलीज़ हुई थी। इसका निर्माण और निर्देशन नासा के पूर्व वैज्ञानिक वेदव्रत पाइन ने किया था।

(तेज, कर्मठता और बलिदान की जीवन्त प्रतिमा क्रान्तिकारी कल्पना दत्त जोशी को कृतज्ञ श्रद्धांजलि।)

जो लौट के घर न आए

(हमारी विभागीय गृह-पत्रिका '**आँचल**' के इस नियमित स्तम्भ में हम देश और देशवासियों की रक्षा में पिछले एक वर्ष में सर्वोच्च बलिदान देनेवाले वीर सपूतों के बलिदानों का स्मरण कर उन्हें कृतज्ञतापूर्वक श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। हमारा देश ओर जहाँ चीन, पाकिस्तान, आतंकवाद जैसी बाहरी चुनौतियों से लोहा ले रहा है, वहीं दूसरी ओर प्राकृतिक और मानवजनित आपदाओं का भी सफलतापूर्वक मुकाबला कर रहा है। इस अंक से हम अपने उन रण-बाँकुरों की रण-गाथाएँ सामने ला रहे हैं जिन्होनें देश के प्रति अपने कर्तव्य को सबसे ऊपर रखा और ज़रूरत पड़ने पर सर्वोच्च बलिदान देने से भी पीछे नहीं हटे। अपनी मातृभूमि की आन, बान और शान की रक्षा का प्रण लेकर गए, कर्तव्य-यज्ञ में ऐसे समर्पित हुए कि फिर कभी लौट के घर न आ सके। आशा है कि आप सुधी पाठकों को हमारा यह विनम्र प्रयास अच्छा लगेगा – सम्पादक)

1. सूबेदार राजेंद्र प्रसाद, राइफलमैन मनोज कुमार, राइफलमैन लक्ष्मणन डी और राइफलमैन निशांत मलिक

11 अगस्त 2022 को सुबह के लगभग तीन बज रहे थे। राजौरी जिले के परगल में भारत और पाकिस्तान के बीच नियंत्रण रेखा के समीप स्थित स्थित सैन्य-शिविर के पास ड्यूटी पर तैनात संतरी ने कुछ संदेहास्पद हलचल देखी। उसने तुरंत अपने साथियों को सावधान कर दिया। घने जंगलों से घिरा वह क्षेत्र बहुत ही दुर्गम है। उस दिन उस जगह का मौसम भी बहुत ही खराब था। दृश्यता बिल्कुल ही कम थी।

संतरी द्वारा चुनौती दिए जाने आतंकवादियों ने दनादन ग्रेनेड फेककर हमला शुरु कर दिया। आतंकवादियों की मंशा थी कि किसी तरह शिविर के बाड़ को पार कर लिया जाए ताकि अधिक से अधिक सैनिकों को मार सकें। दोनों ओर से भीषण गोलीबारी शुरु हो गई। लगभग दो घंटो तक चले इस ऑपरेशन में लश्कर-ए-तयबा के दोनों आतंकवादी मारे गए। इस भीषण गोलीबारी में सेना के चार जवान घायल हुए जिन्होंने अस्पताल तक पहुँचते-पहुँचते दम तोड़ दिया। दोनों मृत आतंकवादियों के पास से भारी मात्रा में हथियार और गोले-बारूद बरामद किए गए। समय रहते यदि इस हमले का मुँहतोड़ जवाब नहीं दिया जाता तो छह वर्ष पहले घटित उरी जैसी घटना हो सकती थी। अदम्य साहस, युद्ध-कौशल एवं सैन्य-भावना का प्रदर्शन करते हुए भारत के चार योद्धा वीरगति को प्राप्त हुए। सूबेदार राजेंद्र प्रसाद, राइफलमैन मनोज कुमार, राइफलमैन लक्ष्मणन डी और राइफलमैन निशांत मलिक ने आत्मघाती हमले में 2 आतंकवादियों को मार गिराते हुए सर्वोच्च बलिदान देते हुए वीरगति को प्राप्त किया। इन चारों ने पिछली रात ही अपने परिवार के लोगों से बात की थी। राइफलमैन निशांत अपनी बहन से क्षमा माँग रहा था कि इस वर्ष रक्षाबंधन में नहीं आ सकेगा जो अगले ही दिन था।

आँचल परिवार सूबेदार राजेन्द्र प्रसाद, राइफलमैन मनोज कुमार, राइफलमैन लक्ष्मणन डी और राइफलमैन निशांत मलिक की बहादुरी और सर्वोच्च बलिदान को सलाम करता है।

2. **हेड कांस्टेबल गिरजेश कुमार उदे**

दिनांक 19.08.2022 को नं. 950011040 हेड कांस्टेबल गिरजेश कुमार उदे, 145 बटालियन सीमा सुरक्षा बल एवं उसकी टीम द्वारा नगालैंड में प्रतिबंधित संगठन NLFTs की धमकी के मद्देनजर उनके खिलाफ एक ऑपरेशन की शुरूआत की गई। अंतर्राष्ट्रीय सीमा के साथ सामरिक गश्त के दौरान उग्रवादियों द्वारा उनकी टीम पर घात लगाकर हमला कर दिया। पहले प्रत्युतरकर्ता के रूप में, उसने अपनी टीम को सतर्क किया और उग्रवादियों पर गोली चलाने लगे।

अब तक दोनों ओर से भीषण गोलीबारी चल रही थी। गिरजेश के साथियों ने उग्रवादियों की घेरेबंदी प्रारंभ कर दी और इस दौरान गिरजेश अपने साथियों को फायर-कवर देते रहे। लेकिन इसी प्रक्रिया में हेड कांस्टेबल गिरजेश कुमार उदे को गोली लग गई। इसके बाद भी उक्त हेड कांस्टेबल ने अंतिम सांस तक उग्रवादियों का डटकर मुकाबला किया और उन्हें भागने पर मजबूर कर अपने साथियों की जान बचाई। अंत में उन्होंने उग्रवादियों से लड़ते हुए मातृभूमि की रक्षा में अपना सर्वोच्च बलिदान दिया।

आँचल परिवार हेड कांस्टेबल गिरजेश कुमार उदे की बहादुरी और सर्वोच्च बलिदान को सलाम करता है।

3. हेड कांस्टेबल/जीडी विशाल कुमार

बी/132 बटालियन के उपनिरीक्षक/जीडी दिलीप कुमार की कमान में एक सेक्शन को पुलिस थाना मैसूमा, श्रीनगर के भैरव मंदिर चौक पर कानून-व्यवस्था बनाए रखने की डयूटी के लिए तैनात किया गया था। लगभग 15.30 बजे बाजार क्षेत्र में भीड़ का फायदा उठाकर 02 अज्ञात आतंकवादियों ने तैनात केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों पर नजदीक से फायरिंग कर दिया।

सी.आर.पी.एफ. के बहादुर जवानों ने भी तुरंत ही मोर्चा संभाल लिया। दोनों ओर से फायरिंग होने लगी। इसी क्रॉस-फायरिंग में सेवा संख्या 035203529 मुख्य आरक्षी/जीडी विशाल कुमार को गोली लग गयी। उक्त जवान ने घायल होने के बावजूद भीड़ भरे बाजार क्षेत्र में संपार्श्विक क्षति को कम करने के लिए बहादुरी और सावधानी से जवाबी कार्रवाई की और आतंकवादियों को क्षेत्र से भागने के लिए मजबूर कर दिया। इस प्रकार वह अपने साथी सैनिकों की जान बचाने में सक्षम हुए। उक्त घायल जवान को तुरंत एस.एम.एच.एस. अस्पताल, श्रीनगर ले जाया गया, जहाँ उन्होंने दिनांक 04/04/2022 को मातृभूमि के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया। मुख्य आरक्षी/जीडी विशाल कुमार का अदम्य साहस और सर्वोच्च बलिदान सी.आर.पी.एफ. की सर्वोच्च परंपरा की ही कड़ी है।

आँचल परिवार हेड कांस्टेबल/जीडी विशाल कुमार की बहादुरी और सर्वोच्च बलिदान को सलाम करता है।

4. कांस्टेबल/जीडी विवेक तिवारी

सेवा संख्या 174501783 कांस्टेबल/जीडी विवेक तिवारी, 159 वी वाहिनी सीमा सुरक्षा बल को 09-10 जनवरी 2022 की दरम्यानी रात में कुटाडाह बीओपी के हरिया नाला क्षेत्र में घात/पेट्रोलिंग ड्यूटी के लिए तैनात किया गया था। लगभग 05.10 बजे कांस्टेबल विवेक तिवारी को पास में कुछ आवाज सुनाई दी और पाया कि कुछ तस्कर घने कोहरे और अंधेरे का फायदा उठाकर मवेशियों को बांग्लादेश की ओर ले जाने की कोशिश कर रहे थे। सतर्क कांस्टेबल विवेक तिवारी ने उन्हें रूकने की चेतावनी दी, लेकिन तस्कर अनुसना कर अपनी कार्रवाई करते रहे। तस्करी की आशंका को भांपते हुए कांस्टेबल विवेक तिवारी ने आत्मरक्षा में 02 राउंड फायरिंग की और तस्करों की ओर बढ़े।

इस दौरान तस्करों ने कांस्टेबल विवेक तिवारी को पकड़ लिया और नदी में धकेल दिया। फायरिंग की आवाज से चौंकन्ने होकर विवेक के कई साथी भी उस तरफ लपके। उनमें से कुछ ने तस्करों को पकड़ा जबकि कुछ विवेक की खोज में लगे। जब तक वे विवेक तक पहुंच पाते उससे पहले ही कांस्टेबल विवेक तिवारी की हरिया नाला के गहरे पानी में डूबने से मृत्यु हो गई। कांस्टेबल विवेक तिवारी ने देश की रक्षा करते हुए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया जिसके लिए बल और देश हमेशा उनका ऋणी रहेगा।

आँचल परिवार कांस्टेबल/जीडी विवेक तिवारी की बहादुरी और सर्वोच्च बलिदान को सलाम करता है।

जब अन्त समय आया तो कह गए कि अब चलते हैं
खुश रहना देश के यारों अब हम तो सफ़र करते हैं।
जो ख़ून गिरा पर्वत पर वह ख़ून था हिन्दुस्तानी
जो शहीद हुए हैं उनकी ज़रा याद करो क़ुर्बानी।

- कवि प्रदीप

नेताजी, तुम हो अमर आज भी

(नेताजी सुभाषचंद्र बोस के जन्मदिवस के अवसर पर)

रितु मोटवानी
व.ले.प.अ

हे महान सपूत देश के
माँ भारती के लिए बलिदान दिया
तुमने अपना सारा जीवन
दिया देश को नया नेतृत्व
जब थी उसे तुम्हारी ज़रूरत
नेताजी, तुम हो अमर आज भी 1

अहिंसा व हिंसा ! कौन है रास्ता ?
इस निरर्थक बहस में जब
उलझा था पूरा देश अपना
देश को तब तुमने बताया
सर्वोच्च है राष्ट्रहित, राह से बढ़कर सदा
नेताजी, तुम हो अमर आज भी 2

तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा
यह आह्वान नहीं, मंत्र था सबके लिए
फिर माँ भारती के वीर सपूतों ने
परदेस में भी दे दिया एक फ़ौज़ तुमको
पछाड़कर दुश्मनों को तुम आ गए कोहिमा तक
नेताजी, तुम हो अमर आज भी 3

फहरा दिया तिरंगा अंडमान व कोहिमा में
राष्ट्र को नवचेतना दी परदेस से
विश्वास दिया मुक्ति का दासता से
नई ऊर्जा नया शक्ति नया विहान दिया
आज पूरा देश करता गुणगान तेरा
हाथ जोड़ कर वन्दना हम कर रहे
नेताजी, तुम हो अमर आज भी 4

"मैं दुनिया की सब भाषाओं की इज्जत करता हूँ, परन्तु मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं नहीं सह सकता" – आचार्य विनोबा भावे

प्रार्थना

श्रीमती वीणा शिरशाट
पर्यवेक्षक

दिन रात यही सब सोच-सोच मैं उलझ गई
विधना के किस लेख पर हो मैं विवश गई।

जीवन कभी न आसाँ होता मालूम हमको है
स्वजन, परिजन, ये जन, वे जन में ही बिसर गई।

जो भी होगा देखा जाएगा ऐसा ही सोचा था
जीवनसाथी और बेटियों से बल पाकर सहज गई।

वक्त कहाँ रुकता है पिताजी थे बीमार हुए
पुत्रियों की सूझबूझ में बहती सारी तिमिस गई।

नतमस्तक हूँ प्रभु, एक प्रार्थना सुन लोगे मेरी तुम क्या
राहें करना सुगम हे दाता ! जिस पर अब मैं निकस गई।

काम आ सकूँ अपनों के और जीवों के, मानवता के
सबको खुश रख पाऊँ दोनों कर जोड़े मैं विनत गई।

जय जय कम्प्युटर महाराज

जय राम सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

जय जय कम्प्युटर महाराज ।
सदा सदा मैं शरण तिहारी, सिद्ध करो सब काज ।।

आज के युग के तुम ही नायक, विद्या-बुद्धि-यश के दायक
दिन का आदि-अंत तुमसे है, पल-पल के तुम एक सहायक
तुम पर सबको नाज ।।

जीवन के हर काम में तुम हो, कुछ अंगारे कुछ शबनम हो
हर मोबाइल में तुम बजते, चाहे खुशियाँ हों या ग़म हो
प्रगति के तुम ताज ।।

सौ के काम अकेले करते, तुम ही रोज़ झमेले करते
तुम दुनिया की सैर कराते, तुम ही मेसी-पेले करते
पुलकित सारा समाज ।।

तुम जब मिस-हैंडिल हो जाते, पल में हाहाकार मचाते
तुममें सब कुछ सही नहीं है, दुश्मन भी अधिकार जताते
गिर न जाए गाज ।।

कूटलबों की कुंजी तेरी, सदा सुरक्षित रहे सुनहरी
कूट कठिन जिसकी है पूँजी, कूट बनी है जिसकी प्रहरी
उसी की बचती लाज ।।

खूबसूरत संसार

सुश्री प्रतिभा वर्मा
लेखापरीक्षक

जब सब सो जाते हैं
और सपने भी खो जाते हैं
तो दूर कहीं अँधेरे में
तुम हिम्मत मत हारना
जगमगाओ जैसे चाँद जगमगाता है अँधेरे में
और मसीहा उम्मीद जगाता है, सोते हुए जज्बातों में
जैसे सर्द रातों में इंसान अलाव जलाता है
जैसे दिन भर काम करके थका इंसान घर आकर खाना खाता है
दुःख-दर्द, डर और अकेलेपन की इस रात में
तुम उम्मीद की पहली किरण बनो
आगे बढ़ने के लिए अपनों को देखो
दर्द किसे कितना है इस दुनिया में
समझने के लिए उनके जख्मों को देखो

नफ़रत से इस बंजर जंगल में
तुम प्यार की बहार लेकर आओ
रोते हुए बच्चे के चेहरे पर
फिर से एक मुस्कान लेकर आओ
हाथ बढ़ाओ, मदद का हाथ पाने के लिए
हाथ बढ़ाओ, किसी के साथ हो जाने के लिए
दूर होते दोस्त को देखकर उससे बात कर लो
सिर्फ एक बात हो जाने के लिए जगमगाओ
जैसे चाँद जगमगाता है अँधेरी रातों में
जैसे मसीहा उम्मीद जगाता है, सोते हुए जज्बातों में

“हिंदी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा है” - विलियम केरी

कहाँ पहुँच गए हम

दीपेन्द्र कुमार राज
लेखापरीक्षक

एक दिन तो खत्म होगा ही पेट्रोलियम
फिर लोग चाहेंगे प्रकृति में ऊर्जा सृजन
पेट की भूख रसोई की आग से बुझेगी
सैर सपाटे गाडियों के काफिले रुकेंगे।

पत्ते फिर बीनेंगे लकड़हारा शब्द होगा
लकड़ियाँ बमुश्किल मिलेंगी कोयला भी
पेड़ के पत्ते हरबेरियम से निकल कर
बताएँगे अपने कुल, परिवार का महत्व।

पचास सालों के बाग भी तत्काल लगेंगे
टाइम मशीन से एक साल को एक दिन कर
लिथियम बैटरी की खुशी चन्द दिन
धूप की बेसब्री तब भोर में जगाएगी।

आरओ मिनरल के आगे होंगे घड़े
धरती पर हर सभ्यता की अति हुई
गाँव बने, कुएँ सरोवर बाग हरे भरे
अब ठंढ़ी साँसों का कारोबार बड़ा।

मगर एक बात तो सच है सच रहेगी
ऊर्जा रूपांतरण में क्षय का अटल नियम
अनंत ऊर्जा का स्रोत ढूँढ़ते तपस्वी भी
पीपल बरगत को छोड़ वातानुकूलन में।

जिंदगी जीने से अधिक की जद्दोजहद
नदी बहती नहीं रुकावटें तमाम उद्देश्य
हर काम की जल्दी, उम्र भी जल्दी में
बस पहुँचना कहाँ वाकिफ नहीं कोई।

मस्त बचपन

रितु मोटवानी
व.ले.प.अ

चाहे गर्मी हो या सर्दी
चाहै मूसलाधार वर्षा हो
बच्चे तो बच्चे ही होते हैं और खेलते रहते हैं
मस्ती में अपना जीवन जीते रहते हैं
घर में भी ये मस्ती करते
पाठशाला में खेलते रहते
बेफ़िक्र अपनी दुनिया में मस्त रहते
बचपन ही एक ऐसी अवस्था है
जहाँ न कोई चिंता न कोई परेशानी
न कोई सुख और न कोई दुख
न धन कमाने की कोई होड़
न किसी भी तरह की कोई लालसा
ये अपनी उत्तेजना में सक्रिय रहते
ये मासूम से और होते सब कुरीतियों से परे
ये तो केवल साफ दिल और मनमौजी होते हैं
यह बचपन एक बार गया फिर दोबारा न आएगा
इसलिए बचपन सबका एक यादगार बचपन रहता है

गीतिका

जय राम सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

इक ऐसा भी पाप हुआ है।
डाकू के घर जाप हुआ है॥

पुल के ऊपर वही चलेगा
जिसको करुण विलाप हुआ है।

चोरों का दल संत बनेगा
किसको पश्चात्ताप हुआ है ?

जिसे दवा करनी थी वह ही
ज़हर उगलता साँप हुआ है।

रोटी, कपड़ा और मकाँ हो
तब सुर में आलाप हुआ है।

एमबीबीएस मार रहा झख
डॉक्टर झोलाछाप हुआ है।

इंटरनेट, मोबाइल युग में
हर बच्चा अब बाप हुआ है।

सरकारी शिक्षा का सिस्टम
डिग्री भर का ताप हुआ है।

"प्रान्तीय ईर्ष्या–द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज़ से नहीं मिल सकती" - नेताजी सुभाषचंद्र बोस

ग़ज़ल

श्री हरीश कु. मीणा
स.ले.प.अ.

हर दिन मज़ेदार-सी शुरुआत कीजिये।
हर दिन ज़िंदगी को सुप्रभात कीजिये॥

हर दिन निकालिए फुर्सतों के कुछ पल
हर दिन अपने आप से भी बात कीजिये।

हौसलों के फूल कहीं सूख न जाये
खारे आँसू की न बरसात कीजिये।

फोन से संबंध यदि बिगड़ने लगे तो
रूबरू आकर ही मुलाक़ात कीजिये।

काँच की तरह हैं माँ- बाप के भी दिल
जुबां के हथोड़े से न आघात कीजिये।

कमेन्ट के तीर से आहत न करें दिल
ऑनलाइन भी न रक्तपात कीजिये।

हर दिन मजेदार सी शुरुआत कीजिये
हर दिन ज़िंदगी को सुप्रभात कीजिये।

"समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।" - (जस्टिस) कृष्णस्वामी अय्यर

रास्ते

श्री जिज्ञासु पंत
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

मुझे रास्तों पर चलने का बड़ा शौक है। यह शौक असल में एक आदत भी हो सकता है - एक भावोद्वेग कि आपने रास्ता देखा और उस पर चल पड़े; या नहीं भी चले तो चलने के बारे में सोचने लगे। फिर उस चलने के बारे में सोचने में ही इतना समय और ऊर्जा लगा देना, जो उस रास्ते पर असल में चलने पर भी खर्च नहीं होती।

कभी-कभी दोराहे या तिराहे पर आकर एक रास्ता चुनना बड़ा ही कठिन होता है। कुछ न कुछ चुनना ही है; यह सोचकर चुन भी लिया तो मन एक रास्ते पर चल देता है और शरीर दूसरे। शायद तीसरा रास्ता इसमें भी रह गया हो, पता नहीं।

यह इंसानी दिमाग की ही उपज है या हमारे समाज की सीख कि रास्ता देखकर रहा ही नहीं जाता। उस पर चलने का मन करता है। रास्ता देखकर अपने ठहराव से उलझन होने लगती है। इसी रास्ते पर मेरी मंज़िल है, ऐसा आभास होने लगता है।

कितना मुश्किल है अपने भावोद्वेगों को नियंत्रित कर पाना ? जो देखते ही आपके दिमाग में हज़ारों संभावनाएँ कुलांचें मारने लगती हैं उसको नज़रअंदाज़ कर देना ! हाँ, अगर आपको कारण ही दिखना बंद हो जाए तो अलग बात है।

मैंने आज तक किसी जहाज़ से यात्रा नहीं की है। समुद्र के सामने पहुँचना मेरे लिए रास्तों का अंत है। किसी रूमानी अंदाज़ में नहीं, बल्कि मेरे दिमाग का जो भावोद्वेग वाला हिस्सा है, उसके हिसाब से। ये रास्तों का खत्म होना बहुत ही सुकून देनेवाला है। दिमाग में शांति है। वो कहीं जाना नहीं चाहता, कुछ करना भी नहीं चाहता। यहाँ मैं कर्त्ता नहीं हूँ, बस साक्षी हूँ। क्या पता, दो-चार बार समुद्र की यात्रा कर लेने पर यह सुकून भी चला जाए।

धीरे-धीरे मेरा भावोद्वेग रूप बदलने लगा है। पहले वह त्वरित रहता था, गतिशील रहता था, अब सुकून का रूप लेने लगा है। मुझे मेरे सुकून के महत्व का आभास होने लगा है। कितना ख़ूबसूरत है यह अनुभव ! शायद मैं सुकून से प्रेम करने लगा हूँ। मेरा प्रेमी मेरे पास हो, बस इतनी ही तो इच्छा है। इस इच्छा का क्या करूँ। कभी-कभी डर भी सताने लगता है कि कहीं यह सुकून मेरे पास से चला न जाए। लेकिन जब डर आने ही लगा तो सुकून कैसा ? मन को समझाता हूँ – मेरे मन, बस इन सुकूनभरे पलों का आनंद लो। जब तक यह सुकून मेरे पास है तब तक मुझे क्या सोचना ? हर नई सोच नए रास्ते की तरफ इशारा करती है। नए रास्ते, नई चुनौतियाँ। अब बस भी करो मेरे मन ! सुकून है, आनंद लो।

परिधान और सोच

प्रवीण नाफाड़े
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

एक महिला को सब्ज़ी मंडी जाना था। उसने जूट का बैग लिया और सड़क के किनारे सब्ज़ी मंडी की ओर चल पड़ी। तभी पीछे से एक ऑटोवाले ने आवाज़ दी – "कहाँ जाएँगी माताजी ....?" महिला ने "नहीं भैया" कहा तो ऑटोवाला आगे निकल गया।

अगले दिन महिला अपनी बिटिया कल्पना को स्कूल बस में बिठाकर घर लौट रही थी। तभी पीछे से एक ऑटोवाले ने आवाज़ दी – "बहन जी, इंद्रपुरी जाना है क्या ?" महिला ने मना कर दिया।

पास से गुज़रते हुए उस ऑटोवाले को देखकर महिला पहचान गई कि यह कल वाला ही ऑटोवाला था। आज महिला को अपनी सहेली के घर जाना था। वह सड़क किनारे खड़ी होकर ऑटो की प्रतीक्षा करने लगी। तभी एक ऑटो आकर रुकी – "कहाँ जाएँगी मैडम ?" महिला ने देखा कि यह वही ऑटो वाला है जो कई बार इधर से गुज़रते हुए उससे पूछता रहता है चलने के लिए। महिला बोली – "देवांगना चौक है न हज़ारीबाग में, वहीं जाना है, चलोगे ... ?"

ऑटोवाला मुस्कुराते हुए बोला – "चलेंगे क्यों नहीं मैडम, बैठिए ... !" ऑटो वाले के इतना कहते ही महिला ऑटो में बैठ गई। ऑटो स्टार्ट होते ही महिला ने जिज्ञासावश उस ऑटोवाले से पूछ ही लिया – "भैया, एक बात बताइए .. ? दो-तीन दिन पहले आप मुझे माताजी कहकर चलने के लिए पूछ रहे थे, कल बहन जी और आज मैडम, ऐसा क्यों ... ?" ऑटो वाला थोड़ा झिझककर शर्माते हुए बोला – "जी सच बताऊँ .... आप चाहे जो भी समझे पर किसी का भी पहनावा हमारी सोच पर असर डालता है। आप दो-तीन दिन पहले साड़ी में थीं तो एकाएक मन में आदर के भाव जागे, क्योंकि मेरी माँ हमेशा साड़ी ही पहनती हैं। इसीलिए मुँह से अपने-आप ही 'माताजी' निकल गया। कल आप सलवार-कुर्ते में थीं जो मेरी बहन भी पहनती है। इसीलिए आपके प्रति स्नेह का भाव मन में जागा और मैंने 'बहन जी' कहकर आपको आवाज़ दे दी। आज आप जीन्स-टॉप में हैं और इस लिबास में माँ या बहन के भाव तो नहीं जगते। इसीलिए मैंने आपको 'मैडम' कहकर पुकारा।"

ऑटोवाला अब चुप हो गया था। महिला कुछ भी नहीं बोल पा रही थी, चुपचाप ऑटोवाले की बात सुनती जा रही थी। ऑटोवाला चुप हो गया था लेकिन महिला अभी भी उसकी बातों में विचारमग्न थी। वह सोच रही थी कि 'माता जी', 'बहन जी' और 'मैडम जी' - इन तीनों में से उसके लिए क्या अच्छा रहेगा।

"विदेशी भाषा का किसी स्वतंत्र राष्ट्र के राजकाज और शिक्षा की भाषा होना सांस्कृतिक दासता है।"

- वाल्टर चेनिंग

मेढ़क और चूहा

सुरेश कुमार
लेखापरीक्षक

बहुत समय पहले की बात है, किसी घने जंगल में एक छोटा-सा जलाशय था। उसमें एक मेंढक रहा करता था। उसे एक दोस्त की तलाश थी। एक दिन उसी जलाशय के पास के एक पेड़ के नीचे से चूहा निकला। चूहे ने मेंढक को दुखी देखकर उससे पूछा – दोस्त, क्या बात है ? तुम बहुत उदास लग रहे हो ? मेंढक ने कहा - 'मेरा कोई दोस्त नहीं है, जिससे मैं ढेर सारी बातें कर सकूं। अपना सुख-दुख बताऊं।' इतना सुनते ही चूहे ने उछलते हुए जवाब दिया - 'अरे! आज से तुम मुझे अपना दोस्त समझो, मैं तुम्हारे साथ हर वक्त रहूंगा।' इतना सुनते ही मेंढक बेहद खुश हुआ।

दोस्ती होते ही दोनों घंटों एक दूसरे से बातें करने लगे। मेंढक जलाशय से निकलकर कभी पेड़ के नीचे बने चूहे के बिल में चला जाता, तो कभी दोनों जलाशय के बाहर बैठकर काफी बातें करते। दोनों के बीच की दोस्ती दिनों-दिन काफी गहरी होती गई। चूहा और मेंढक अपने मन की बात अक्सर एक दूसरे से साझा करते थे। होते-होते मेंढक के मन में हुआ कि मैं तो अक्सर चूहे के बिल में उससे बातें करने जाता हूं, लेकिन चूहा मेरे जलाशय में कभी नहीं आता। ये सोचते-सोचते चूहे को पानी में लाने की मेंढक को एक तरकीब सूझी।

चालाक मेंढक ने चूहे से कहा - 'दोस्त, हमारी मित्रता बहुत गहरी हो गई है। अब हमें कुछ ऐसा करना चाहिए जिससे एक दूसरों की याद आते ही हमें आभास हो जाए।' चूहे ने हामी भरते हुए कहा - 'हां जरूर, लेकिन हम ऐसा करेंगे क्या ?' दुष्ट मेंढक फटाक से बोला - 'एक रस्सी से तुम्हारी पूंछ और मेरा एक पैर बांध दिया जाए तो जैसे ही हमें एक दूसरे की याद आएगी तो हम उसे खींच लेंगे, जिससे हमें पता चल जाएगा।' चूहे को मेंढक के छल का जरा भी अंदाजा नहीं था। इसलिए भोला चूहा एकदम इसके लिए राजी हो गया। मेंढक ने जल्दी-जल्दी अपने पैर और चूहे की पूंछ को बांध दिया। इसके बाद मेंढक ने एकदम पानी में छलांग लगा ली। मेंढक खुश था, क्योंकि उसकी तरकीब काम कर गई। वहीं, जमीन पर रहने वाले चूहे की पानी में हालत खराब हो गई। कुछ देर छटपटाने के बाद चूहा मर गया।

बाज आसमान में उड़ते हुए यह सब रहा था। उसने जैसे ही पानी में चूहे को तैरते हुए देखा तो बाज तुरंत उसे मुँह में दबाकर उड़ गया। दुष्ट मेंढक भी चूहे से बंधा हुआ था, इसलिए वो भी बाज के चंगुल में फंस गया। मेंढक को पहले तो समझ ही नहीं आया कि हुआ क्या। वो सोचने लगा आख़िर वो आसमान में उड़ कैसे रहा है ! जैसे ही उसने ऊपर देखा तो बाज को देखकर वो सहम गया। वह भगवान से अपनी जान की भीख मांगने लगा। लेकिन चूहे के साथ-साथ बाज उसे भी खा गया।

दूसरों का नुकसान पहुंचाने की सोच रखने वालों को खुद भी नुकसान उठाना पड़ता है। जो जैसा करता है, वह वैसा ही भरता है। इसलिए दुष्ट लोगों से दोस्ती नहीं करनी चाहिए और हर किसी की हाँ में हाँ नहीं मिलानी चाहिए, बल्कि अपनी बुद्धि का भी प्रयोग करना चाहिए।

है भव्य भारत ही हमारी मातृभूमि हरी भरी
हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि है नागरी

– राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत

तरुण बजाज
स.ले.प.अ.

साठ सेकेंडों से बने मिनट, साठ मिनटों से घंटा, चौबीस घंटों से बने दिन, 365 दिनों से बने साल और उनसे बना एक जीवन-काल। वक्त की तरफ से देखें तो यही है मेरे पास। इसी जीवन-काल में अनगिनत इच्छाओं को पूरा करना चाहता हूँ। एक दिन में न जाने कितने ख्याल आते हैं और इनमें से कितने ख़्वाब बनकर रह जाते हैं।

कुछ ख्यालों को मेरा दिमाग समझा देता है कि नहीं, ये चीज यथार्थ की कसौटी पर खरी नहीं उतरती, परंतु कुछ ख्याल बहुत बेचैन करके ही पीछा छोड़ते हैं। इन्हीं ख्यालों से ही, अक्सर मैं, मेरे द्वारा रची गई काल्पनिक दुनिया में नायक की भूमिका अदा कर रहा होता हूँ, और अपनी इच्छाओं को पूरा कर रहा होता हूँ। इस मनमोही दुनिया में जीना बहुत लुभाता है। फिर अचानक सच्चाई का बिगुल बजता है जो मुझे आसपास की आवाज़ों से अवगत कराता है।

ये तो हो गई असंख्य इच्छाओं की बात ! अगर मुझे उन इच्छाओं की बात करनी हो, जिन्हें मैंने अब तक के जीवन-काल में इतनी गहराई से महसूस किया है कि उसे अपने जीवन के उद्देश्य में तब्दील कर लिया, तो मैं यह पाता हूँ कि आपको बताने के लिए मेरे पास गिने-चुने ही वृत्तांत हैं। ऐसे असाधारण कामों को करके मैंने अति आनंद का अनुभव किया, और इन उपलब्धियों को पाने के लिए मैंने कई-कई दिन अथक प्रयास किया था। यहाँ बैठा मैं यह सोच रहा हूँ कि कैसे ये सब संभव हो पाया ? ऐसी कौन सी जादुई शक्ति मेरे पास थी जिसके प्रयोग से मैंने अपने सपनों को साकार किया ? मैं आज भी नित्य नई इच्छाओं से घिरा हुआ हूँ, पर उन्हें पूरा करने में सक्षम नहीं हूँ। किस चीज़ की कमी है जो मुझे मंजिल से दूर ले जा रही है ? अपना वजन घटाना वर्तमान की मेरी प्रबल इच्छाओं में से एक है। या यूँ कह लीजिए कि मेरी सभी इच्छाओं की सूची तैयार की जाए तो वजन घटाने का स्थान प्रथम होगा। इस सपने को साकार करने में मेरी सबसे अहम भूमिका है। मैं इसे पाने के लिए रोज बहुत कोशिश कर रहा हूँ। अब चिंता की बात यह है कि मेरा वजन घटने का नाम ही नहीं ले रहा है। ज्यादा वजन से मुझे रोजमर्रा के जीवन में काफी कठिनाइओं का सामना करना पड़ता है। इन सब परेशानियों को दूर करने के लिए ही मैं इतनी मेहनत कर रहा हूँ, लेकिन सफलता से अब भी कोसों दूर हूँ।

एकांत में इस विषय पर मननशील हो मैंने ये निष्कर्ष निकाला है कि जो वस्तु इस कार्य में रोड़ा बन रही है वो और कोई नहीं 'मैं' ही हूँ। ज्यादा आसान शब्दों में कहूँ तो मेरा मन है असली मुजरिम ! जैसा कि मैंने आपसे कहा कि मैं तो अपने लक्ष्य को पाने के लिए पुरजोर कोशिश कर रहा हूँ, परंतु मुझसे चूक मन में उमड़ती क्षणिक आनंद लेने की कुछ अभिलाषाओं के आगे नतमस्तक होने के कारण हो रही है। ऐसी क्षणमात्र की चाहतों की संख्या काफी ज्यादा है और इन पर मेरा नियंत्रण न के बराबर है। जब भी कुछ खाने की या अपनी अनुशासित दिनचर्या से हट कर कुछ करने की तीव्र इच्छा मन में उत्पन्न होती है तो उसी पल मन इस दुविधा में उलझ जाता है कि क्या कदम उठाऊँ ? अपनी मेहनत से सींची अनुशासित कार्यप्रणाली को बने रहने दूँ या उसे तोड़ क्षणिक लुभावनी वस्तु का सेवन कर लूँ। बस, इन्हीं कुछ पलों में मेरे मन की असली परीक्षा होती है जिस पर मेरे लक्ष्य तक पहुँचना तक का फासला

घटता या बढ़ता है। अब मैं यह कहूँ कि मेरा मन अपनी जिम्नेदारियों से बचने की कला में निपुण है तो कतई गलत नहीं होगा। एक झटके भर में वह किसी व्यक्ति, वस्तु या परिस्थिति पर अपनी नाकामयाबी का सारा दोष मढ़ देगा। जैसे कि मैं अक्सर स्वयं से बोलता हूँ कि आज मेरा मन नहीं कर रहा, तुम्हारी वजह से मैं नहीं कर पाया और ना जाने क्या-क्या। मन तो अपनी सुविधानुसार संगति ढूँढ़ ही लेता है। परंतु इस सबका भुगतान तो अंत में मुझे ही करना पड़ता है। मेरी कौन सी दुखती रग को दबाना है इसे मेरा मन भली-भाँति जानता है।

मान लिया कि यह मन चंचल है लेकिन दृढ़ निश्चय कर इसे स्थिर किया जा सकता है। इसकी प्रोग्रामिंग को अगर ठीक कर लिया जाए तो नतीजा मेरे पक्ष में ही आता है। मेरे शुभचिंतक द्वारा बोली गई या मेरे से कहीं पढ़ी/सुनी गई प्रेरणादायक बातों को अगर मैं अपने मन में दोहराता हूँ तो मैं असमंजस वाली स्थिति से बाहर आ जाता हूँ। इन्हीं लाभदायक बातों से मुझे अपने मन की प्रोग्रामिंग करनी है और अपने मन को जिताना है।

अगर मैं और भी बारीकी से विचार करता हूँ तो पाता हूँ कि मेरी हार-जीत का निर्णय मेरा मन ही करता है। अगर मन का चेर उन निर्णायक पलों में हवी हो जाता है तो मैं हार जाता हूँ। वो एक-दो सेकेंड ही मेरे आनेवाले घंटों और सालों का सृजनकर्ता है। इस बात को अच्छे से समझकर यदि मन उन सेकेंडों में अपने पथ से नहीं भटकता तो मुझे मेरी मंजिल तक पहुँचने तक कोई नहीं रोक सकता। मैं अपने मन को रोज यह समझाता हूँ कि मंजिल से ज्यादा आनंद सफर में है क्योंकि सफर तो मंजिल के बात भी जारी रहेगा। यानी कि मुझे अपना वजन घटा लेने के बात यथास्थिति तो बनाकर लखनी होगी। मुझे सफर का आनंद उठाते हुए और मन की चोरी न करते हुए अपनी मंजिल तक बढ़ते जाना है। अंततः यथास्थिति ही मेरी मंजिल होगी।

"राष्ट्रीयता का भाषा और साहित्य के साथ बहुत ही घनिष्ट और गहरा संबंध है।"

- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

कंठस्थ 2.0 : राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए एक क्रांतिकारी कदम

जय राम सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

भारत सरकार राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए निरंतर प्रयत्नशील रही है। हिंदी के प्रचार-प्रसार में सबसे बड़ी बाधा मानक अनुवाद की समस्या रही है। इस समस्या के सुगम और सटीक समाधान के लिए राजभाषा विभाग ने एक बड़ा कदम उठाते हुए पुणे की मशहूर सॉफ्टवेयर कंपनी सी-डैक की मदद से कंठस्थ नामक एक सॉफ्टवेयर बनाया गया है जिसकी मदद से अँग्रेजी से हिंदी में आसानी से अनुवाद किया जा सकता है।

कंठस्थ सॉफ्टवेयर के दूसरे संस्करण 'कंठस्थ 2.0' का लोकार्पण विगत 14 सितंबर 2022 को हिंदी दिवस से शुभ अवसर पर माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार द्वारा सूरत में किया गया। तब से राजभाषा विभाग इस सॉफ्टवेयर टूल की उपादेयता और लोकप्रियता बढ़ाने के हर संभव प्रयास कर रहा है।

कंठस्थ 2.0 एक ऐसा टूल है जिसका उपयोग आसानी से कहीं भी, किसी भी समय और किसी के भी द्वारा किया जा सकता है। यह टूल इंटरनेट (मोबाइल, लैपटॉप या डेस्कटॉप) की सुविधा रखनेवाले हर प्रयोगकर्ता के लिए उपलब्ध है। लेकिन सरकारी कर्मचारियों के लिए यह एक सुविधा होने के साथ-साथ एक जिम्मेवारी भी है कि वे सुनिश्चित करें कि इसका डेटाबेस अधिक से अधिक सक्षम, सुदृढ़ और मानक बने ताकि राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में यह टूल इच्छित योगदान दे सके। आइए, जानते हैं कि इस सॉफ्टवेयर टूल का प्रयोग कैसे किया जाए

1. **यूआरएल** – इस सॉफ्टवेयर टूल का यूआरएल https://kanthasth-rajbhasha.gov.in/ है जिसे किसी भी वेब ब्राउजर में खोला जा सकता है।

2. **पंजीकरण** – इस सॉफ्टवेयर का प्रयोग करने से पहले इसमें पंजीकरण कराना अनिवार्य है। पंजीकरण की प्रक्रिया बहुत ही आसान रखी गई है जिसमें कुछ आवश्यक जानकारियाँ जैसे यूजरनेम (प्रयोगकर्ता आईडी), ई-मेल आई.डी, पासवर्ड, पासवर्ड की पुष्टि, प्रयोगकर्ता का नाम व उपनाम, मंत्रालय (भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के कार्मिक इसमें Other चुनें), Other चुनने के बाद टेक्स्टबॉक्स मिलता है जिसमें 'भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग' अथवा 'Indian Audit and Accounts Department' भर सकते हैं, मोबाइल नंबर, ईमेल आईडी, सुरक्षा के प्रश्न (इसका उपयोग पासवर्ड खो जाने की स्थिति में होता है) और सुरक्षा प्रश्न के उत्तर डालने होते हैं तथा प्रयोगकर्ता का प्रोफाइल फोटो चुनने का बटन होता है जो ऐच्छिक है। पंजीकरण की प्रक्रिया में ई-मेल आई.डी लिखे जाने पर Verify बटन सक्रिय हो जाता है। इस बटन को दबाने पर एक वन टाइम पासवर्ड (ओ.टी.पी.) दिए गए ई-मेल पर मिलता है जिसे दिए गए बॉक्स में लिखना होता है।सारी जानकारियाँ पूरी हो जाने के पश्चात आपको सॉफ्टवेयर से संदेश मिलेगा कि "Registration Successful" अर्थात् आपका पंजीकरण सफलतापूर्वक हो गया है।

3. **<u>लॉग-इन</u>** – प्रयोगकर्ता अपने यूजरनेम एवं पासवर्ड के साथ स्क्रीन पर प्रदर्शित Captcha कॉलम को भरकर Login बटन दबा दें।

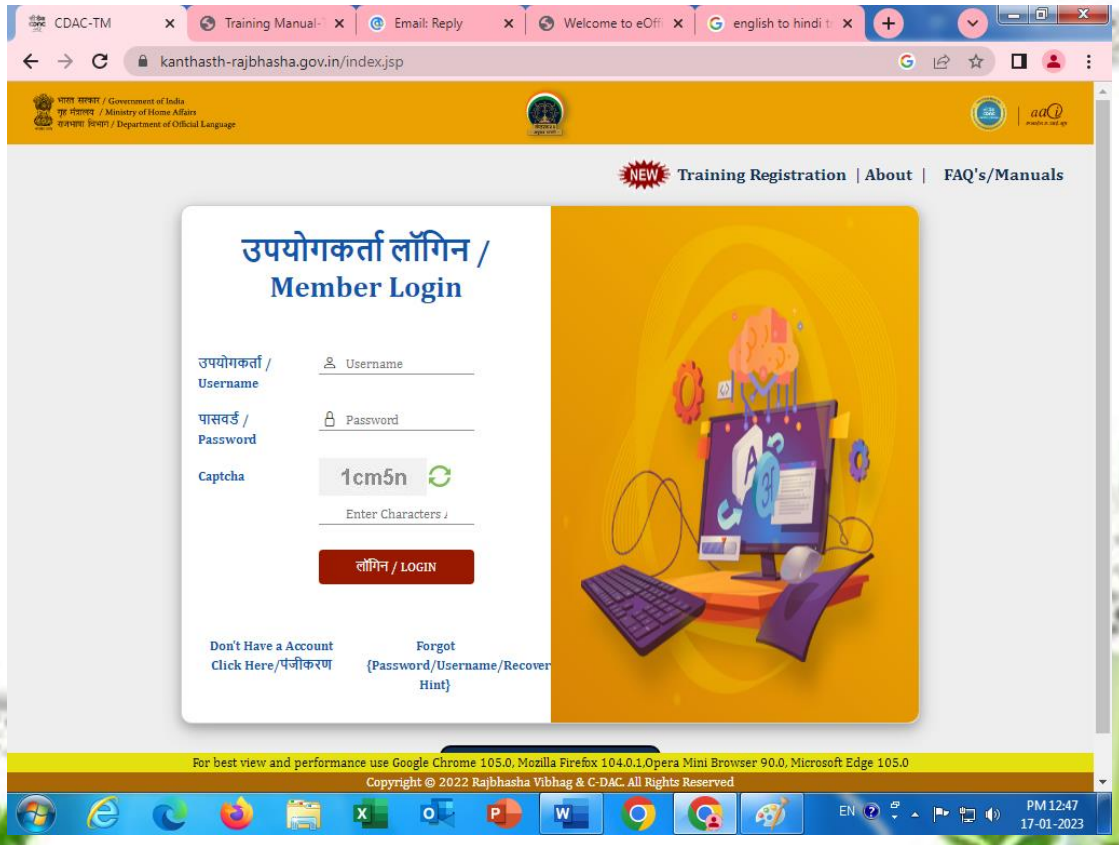

Login सूचनाओं के सत्यापन के पश्चात आपको निम्नलिखित स्क्रीन मिलता है:-

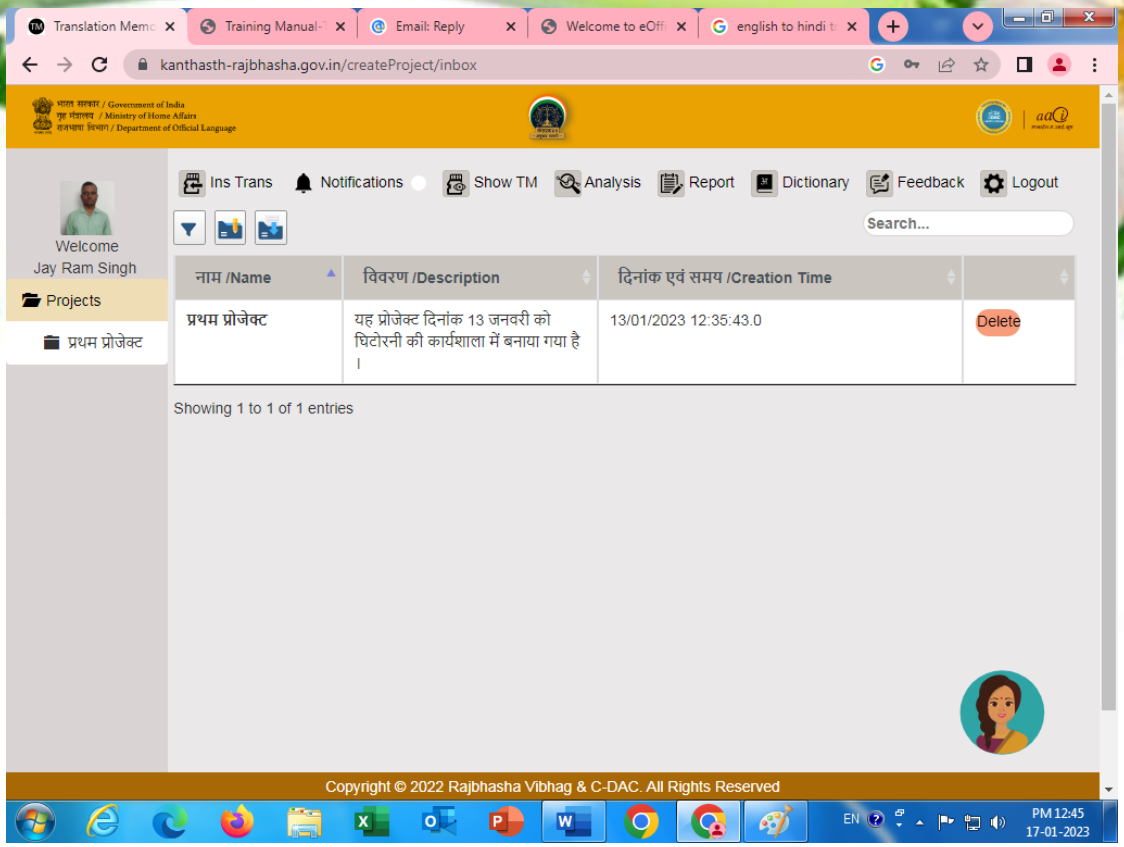

4. **नया प्रोजेक्ट** – कंठस्थ में हर काम प्रोजेक्ट पर आधारित होता है। आप कई प्रोजेक्ट बना सकते हैं। एक प्रोजेक्ट आपस में संबंधित विभिन्न फोल्डरों और फाइलों को व्यवस्थित रखने की एक इकाई है। प्रोजेक्ट बनाने के बाद प्रयोगकर्ता उसके अन्दर फोल्डर बनाएँ फिर फोल्डर को अन्दर कई फोल्डर और आवश्यकतानुसार कई फाइलें इम्पोर्ट कर सकते हैं। ध्यान रहे कि अनुवाद का काम फाइलों पर दो तरह से होता है:– एक-एक वाक्य के आधार पर और पूरी फाइल एक साथ।

5. **फाइल मेनू** – फाइल मेनू में कई विकल्प दिए गए हैं जैसे फाइल को एडिटर में खोलना, फाइल जोड़ना आदि। प्रयोगकर्ता अपनी आवश्यकतानुसार फाइल मेनू में उपलब्ध बटनों का इस्तेमाल कर सकते हैं।

6. **टी.एम** – यह सॉफ्टवेयर ट्रांसलेशन मेमोरी (टी.एम.) पर मशीन-साधित अनुवाद प्रणाली है। वस्तुतः टी.एम. एक डेटाबेस है जिसमें स्रोत भाषा के वाक्यों एवं लक्षित भाषा में उन वाक्यों के अनुवादित रूप को एक साथ रखा जाता है। इस प्रणाली की विशेषता है कि इसमें अनुवादक पूर्व में किए गए अनुवाद को किसी नई फाइल के अनुवाद के लिए पुनः प्रयोग कर सकता है। यदि अनुवाद की नई फाइल का वाक्य टी.एम. के डेटाबेस से पूर्णतः अथवा आंशिक रूप से मिलता है तो यह प्रणाली उस वाक्य के अनुवाद को टी.एम. से लाता है। अनुवाद के लिए प्रणाली का निरंतर प्रयोग करते रहने से टी.एम. का डेटाबेस उत्तरोत्तर बढ़ता रहता है। टी.एम. का डेटाबेस दो तरह का होता है:- ग्लोबल ट्रांसलेशन मेमोरी (जी.टी.एम.) और लोकल ट्रांसलेशन मेमोरी (एल.टी.एम.)। एल.टी.एम. प्रत्येक प्रत्येक अनुवादक के कम्प्यूटर पर अलग-अलग होती है, जबकि जी.टी.एम. एक सामूहिक डेटाबेस है जो राजभाषा विभाग के सर्वर पर उपलब्ध है। सफल परीक्षण के पश्चात विभिन्न एल.टी.एम. जी.टी.एम. का भाग बन जाती है।

7. **सॉफ्टवेयर की कुछ अन्य विशेषताएँ** –

- लोकल एवं ग्लोबल टी.एम. बनाना
- वर्क-फ्लो संयोजन
- अनुवाद के लिए टी.एम. से पूर्ण मिलान
- अनुवाद के लिए टी.एम. से आंशिक मिलान
- पैकेज बनाने/अन्य कम्प्यूटर से प्राप्त करने/अन्य कम्प्यूटर पर भेजने की सुविधा
- प्रोजेक्ट बनाने/अन्य कम्प्यूटर से प्राप्त करने/अन्य कम्प्यूटर पर भेजने की सुविधा
- फाइल को अन्य कम्प्यूटर से प्राप्त करने/अन्य कम्प्यूटर पर भेजने की सुविधा
- अनुवादित फाइल का विश्लेषण - अनुवादित फाइलों की संख्या, पूर्ण एवं आंशिक रूप से मिले हुए वाक्यों की संख्या, प्राप्त/अप्राप्त शब्द इत्यादि की रिपोर्ट
- एक समय-विशेष में बनाए गए पैकेज, प्रोजेक्ट तथा अनुवाद की गई फाइलों की रिपोर्ट
- न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन
- चैटबॉट
- गुणवत्ता निर्धारक मानदंड
- द्विभाषिक फाइल को डाउनलोड एवं अपलोड करना
- विभिन्न फाइल एक्सटेंशन को समर्थन
- फाइल फॉर्मेट को यथावत रखना

8. **अन्य प्लेटफॉर्म से अंतर** - कंठस्थ 2.0 अनुवाद के लिए इंटरनेट पर उपलब्ध अन्य प्लेटफॉर्मों से सर्वथा भिन्न है। कंठस्थ 2.0 में अनुवाद कार्य के योग्य विद्वानों द्वारा समुचित परीक्षण की व्यवस्था की गई है जो राजभाषा हिंदी में अनुवाद संबंधी भिन्नताओं को समाप्त कर मानकीकरण की दिशा में एक मील का पत्थर है। गूगल अनुवाद, एमएस वर्ड अनुवाद या कोई अन्य प्लेटफॉर्म आपके योगदान को उल्लिखित नहीं करता जबकि कंठस्थ टूल पूर्णतया भागीदारी पर आधारित सॉफ्टवेयर है जो हर किसी के योगदान को उल्लिखित ही नहीं करता बल्कि संजोकर रखता है।

कोई भी सॉफ्टवेयर अचानक ही लोकप्रिय नहीं हो जाता। कंठस्थ की वेबसाइट पर कंठस्थ के बारे में बहुत ही उपयोगी जानकारी दी गई है जिसे पढ़कर इस पोर्टल का आसानी से उपयोग किया जा सकता है। वीडियो द्वारा

भी इस पोर्टल के उपयोग के बारे में अच्छी तरह से समझाया गया है। अधिक से अधिक प्रयोगकर्ताओं द्वारा प्रयोग किए जाने से ही कोई सॉफ्टवेयर लोकप्रिय, समृद्ध, सुरक्षित एवं उपयोगी बनता है। हम सभी इस पूर्णतया भारतीय सॉफ्टवेयर पर गर्व करते हुए इसका अधिक से अधिक उपयोग करें ताकि यह राजभाषा हिंदी में अनुवाद के संबंध में सबसे बड़ा मानक डेटाबेस बन सके जिसकी सटीकता पर किसी को कोई संदेह न हो।

"हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।" - स्वामी दयानंद।

पकवान

1. कच्चे आम की मूँग दाल

(दो लोगों के लिए)

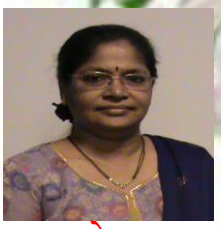

नयना केळसकर
सहायक पर्यवेक्षक

सामग्री – एक कटोरी मूँग दाल, आधी कटोरी कच्चे आम का किस, पाव कटोरी नारियल का किस, दो हरी मिर्च, चार-पाँच करीपत्ता, पाव चम्मच जीरा, एक चम्मच नमक, पाव चम्मच शक्कर या गुड़, तीन चम्मच तेल तथा आधी कटोरी हरी धनिया (वैकल्पिक)

कृति – मूँग दाल पानी में दो घंटे भिंगो के रखें। कढ़ाई में तीन चम्मच तेल गरम होने पर दो हरी मिर्च बारीक कटी हुई, चार-पाँच करीपत्ता, पाव चम्मच जीरा डाल दें। मूँग दाल दो-तीन बार धोकर कढ़ाई में डाल कर मिक्स कर दीजिए और ढ़क्कन लगाकर पाँच मिनट पकने दें। बाद में आधी कटोरी कच्चे आम का किस, पाव कटोरी नारियल का किस, एक चम्मच नमक, पाव चम्मच शक्कर या गुड़, आधी कटोरी हरी धनिया डाल कर मिक्स कर दीजिए और पाव कटोरी पानी डालकर और ढ़क्कन लगाकर दस मिनट पकने दीजिए। बस हो गई कच्चे आम की मूँग दाल तैयार। इस पकवान को उपवास में भी खाया जा सकता है।

2. उपवास के कटलेट

(चार लोगों के लिए)

सामग्री – 100 ग्राम शकरकंद, 100 ग्राम आलू, 100 ग्राम जिमिकंद तथा बैंगनी, जिमिकंद (पर्पल याम), पाव कटोरी नारियल का किस, पाव कटोरी मूँगफली क्रश (टुकड़ा), चार हरी मिर्च, पाव चम्मच जीरा, एक चम्मच नमक, पाव चम्मच शक्कड़ या गुड़, तीन चम्मच तेल, आधी कटोरी हरी धनिया (वैकल्पिक)

कृति – शकरकंद, आलू, जिमिकंद तथा बैंगनी जिमिकंद (पर्पल याम) का छिलका निकाल कर कुकर में दे सीटी तक पकाएँ। ठंढ़ा होने पर उसे स्मैश कर लें और उसमें नारियल का किस, मूँगफली क्रश (टुकड़ा), चार हरी मिर्च, जीरा, नमक स्वादानुसार, शक्कर या गुड़, आधी कटोरी कटी हुई हरी धनिया (वैकल्पिक) मिलाकर उसकी छोटी-छोटी टिकिया बना लें। फ्राई पैन पर थोड़ा-थोड़ा तेल डालकल शॉलो फ्राई कर लें। मीठा दही या चटनी के साथ परोसें। इस पकवान को भी उपवास में खाया जाता है।

(शकरकंद मे कॉर्बोहाइड्रेट, स्टार्च के साथ प्रोटीन, पोटैशियम, आयरन, विटामिन ई और मैग्नीशियम भरपूर मात्रा में मौजूद होता है। पर्पल याम में कॉर्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, फाइबर, पोटैशियम, आयरन, विटामिन ए और सी तथा फाइटोन्यूट्रिएंट्स काफी अधिक मात्रा में मौजूद होते हैं जो सेहत को कई तरह से फायदा पहुँचाते हैं। जिमिकंद में फाइबर, विटामिन सी, बी6, बी1 और फोलिक एसिड के साथ ही पोटैशियम, आयरन, मैग्नीशियम, कैल्शियम और फॉस्फोरस भी पाया जाता है। मौसमी सब्जियों और फलों में कई ऐसे तत्व और न्युट्रिएंट्स होते हैं जो मौसमी बीमारियों से लड़ने में सहायक होते हैं।)

"हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।" - डॉ. राजेंद्र प्रसाद

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव

प्रवीण नाफाड़े
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के बारे में चर्चा ज्यादातर ग्लेशियरों के पिघलने और समुद्र के बढ़ते स्तर पर केंद्रित है, लेकिन नदियों और झीलों पर इस विषय में ज्यादा बात नहीं की जा रही है, जो मानव उपयोग के लिए मीठे पानी की आपूर्ति करती हैं।

नदियों और झीलों मे पानी की कमी

गर्म तापमान और वर्षा या बर्फबारी के नियम में बदलाव के कारण दुनिया भर में नदी और झील प्रणाली बड़े बदलावों से गुजर रही है। जबकि पाकिस्तान गंभीर बाढ़ का सामना कर रहा है, कई प्रमुख नदियों में पानी का प्रवाह उत्तरी अमेरिका से यूरोप, मध्य पूर्व से पूर्वी एशिया तक खतरनाक रूप से कम हो गया है।

कोलोराडो में जल स्तर दशकों से गिर रहा है। यह इस स्तर पर पहुँच गया है कि इस गर्मी में हूवर बाँध के पीछे शक्तिशाली मीड झील लगभग एक मृत कुंड बन गयी है। चार करोड़ से अधिक लोग राइन नदी पर निर्भर हैं, जो चिंताजनक रूप से सूख रही है। राइन पर जल परिवहन पर समझौता यूरोपीय संघ के निर्माण के लिए नींव का पत्थर था। जर्मनी में कुछ जगहों पर उस नदी का जल स्तर ३२ सेंटीमीटर तक गिर गया है, जिससे कंटेनर जहाजों का संचालन लगभग असंभव हो गया है। तथाकथित 'हंगर स्टोन' जर्मनी की राइन नदी और चेक गणराज्य की एल्बे नदी में फिर से सामने आए हैं। 'हंगर स्टोन' एक प्रकार के हाइड्रोलॉजिकल लैंडमार्क हैं जो सामान्यता मध्य यूरोप में पाए जाते हैं। ये पत्थर अकाल इतिवृत्त और चेतावनी के रूप में कार्य करते हैं और वर्तमान पीढ़ी को प्राचीन समय में पड़े भीषण अकालों की याद दिलाते हैं।

यूरोप और चीन अपनी नदियों को खो रहे है। इटली की पो नदी में हाल ही में कई बार बाढ़ आई है, लेकिन इस गर्मी में इसकी नदी के किनारे पर द्वितीय विश्व युद्ध के युग का बम मिला, क्योंकि पानी का प्रवाह लगभग सूख चुका था। फ्रांस को अपने कुछ परमाणु ऊर्जा संयंत्रों के संचालन को कम करने के लिए मजबूर किया गया है क्योंकि रोन और गारोन नदियों के पानी का तापमान बहुत अधिक था, जिसका उपयोग प्लांट कूलिंग उद्देश्यों के लिए नहीं किया जाना असंभव हो चुका था।

सूखे ने इंग्लैंड की टेम्स नदी का स्रोत भी सुखा दिया है। यूरोप की कई महत्वपूर्ण नदियाँ - डेन्यूब, गार्डियाना और लॉयर में भी पानी की गंभीर कमी है। यूरोपीय सूखा वेधशाला के अनुसार, यूरोप का लगभग आधा हिस्सा सूखे की चेतावनी के अधीन है, और शायद पिछले ५०० वर्षों में ऐसा कभी नहीं हुआ है। चीन में भीषण लू के कारण सूखे के पुराने कीर्तिमान टूट गए है। नई जलवायु के कारण यांग्त्ज़ी सहित देश की कई नदियाँ सूख रही हैं। विशाल यांग्त्ज़ी ४० करोड़ से अधिक लोगों को पीने के पानी की आपूर्ति करती है और चीन की बढ़ती अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है। इस वर्ष इसका जल प्रवाह पिछले पाँच वर्षों के औसत के आधे से नीचे चला गया है, मुख्य रूप से बेसिन में वर्षा में ४५ प्रतिशत की गिरावट के कारण इसके जल स्तर में कमी हुई परिणाम स्वरूप चीन को शिपिंग में भारी व्यवधान और जल विद्युत उत्पादन में गिरावट के झेलनी पड़ी।

बढ़ता तापमान और उसके प्रभाव

पानी की बढ़ती मांग और तेजी से गर्म हो रहे ग्रह के कारण न केवल नदी प्रणालियों में जल प्रवाह में गिरावट आई है, बल्कि कई प्रमुख मीठे पानी की झीलें भी सूख रही हैं। मध्य एशिया में अरल सागर, बोलिविया में पूपो झील, मध्य अफ्रीका में चाड झील और कैलिफोर्निया में ओवेन्स झील के जल निकाय लगातार सिकुड़ रहे हैं, जिससे

इन झीलों में और इसके आसपास एक गंभीर पारिस्थितिक संकट पैदा हो रहा है और खाद्य उत्पादन के लिये और अधिक चुनौतियाँ आ रही हैं। बरसात के बदलती प्रकृति और अत्यधिक वाष्पीकरण ने दुनिया के कई हिस्सों में नदियों और झीलों में पानी की मात्रा को काफी कम कर दिया है। नदियों और झीलों के सूखने से न केवल सिंचाई, नौवहन और औद्योगिक उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है; इसने प्रदूषण के बढ़ते स्तर को भी जन्म दिया है क्योंकि पानी की कमी के कारण सामान्य प्रदूषकों भी पानी में घुलकर नष्ट नहीं हो पाते हैं।

बढ़ते प्रदूषण और नदियों और झीलों में पानी के बढ़ते तापमान के कारण मछलियाँ, पौधे और वन्यजीवों की मृत्यु हो जाती है। जलवायु संकट ने मौसम के सामान्य रूप को बदल दिया है, नदियों और झीलों और उन पर निर्भर लोगों और पारिस्थितिक तंत्र (इको सिस्टम) को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है।

जल बँटवारा तंत्र

इसके अतिरिक्त, इनमें से अधिकांश नदियाँ और झीलें देश की सीमाओं को पार करती हैं और दो या दो से अधिक देशों के बीच साझा की जाती हैं। पानी के बँटवारे को लेकर कोलोराडो से राइन तक, डेन्यूब से टर्की की यूफ्रेटिस या फरात नदी और टाइग्रिस या दजला नदी से लेकर अरल सागर तक बेसिन देशों के बीच औपचारिक और अनौपचारिक मानदंड और संस्थान विकसित किए गए हैं।

हालाँकि, ये मौजूदा जल बँटवारे के नियम या बेसिन आधारित जल प्रबंधन संस्थान मीठे पानी पर सहयोग के मार्ग का मार्गदर्शन करने के लिए अपर्याप्त साबित हो रहे हैं क्योंकि जलवायु परिवर्तन ने इसकी उपलब्धता में अभूतपूर्व कमी ला दी है। जबकि नदियों और झीलों पर पुराने जल समझौते गंभीर दबाव में हैं, जल बंटवारे पर नए समझौतों पर हस्ताक्षर करना लगभग असंभव होता जा रहा है।

क्या है भविष्य के गर्भ में

जलवायु परिवर्तन ने पहले ही पृथ्वी के जल संतुलन को खो दिया है, और दुनिया के कई हिस्सों में नदी के प्रवाह को महत्वपूर्ण रूप से बदल दिया है। संभावना यह है कि यह सब भविष्य में भी जारी रहने वाला है। इस साल नदियों और झीलों का सूखना एक साल की घटना नहीं रहेगी, इस घटना के अधिक बार दोहराने की संभावना है। इन सारी समस्याओं के से बचने के लिये सारी दुनिया को जलवायु परिवर्तन के खिलाफ अपनी लड़ाई को प्राथमिकता देते हुए एक साथ आना चाहिए।

"समस्त आर्यावर्त या ठेठ हिंदुस्तान की राष्ट्र तथा शिष्ट भाषा हिंदी या हिंदुस्तानी है।"

-सर जार्ज ग्रियर्सन।

जीवन और नौकायन

अंकित आज़ाद
स.ले.प.अ.(पी.)

"नाव अपने आसपास के पानी के कारण नहीं डूबती, नाव डूबती है अन्दर घुसनेवाले पानी से " - रतन टाटा

रतन टाटा ने एक बार कहा था कि ईसीजी मशीन पर दिल की धड़कन जीवन में उतार-चढ़ाव का प्रतिनिधित्व करती है, इसका मतलब है कि आप जीवित हैं। लेकिन जब ईसीजी मशीन की रेखा सीधी हो जाती है, तो इसका मतलब है कि आप मर चुके हैं।

उपरोक्त उद्धरण यह दिखाने की कोशिश करता है कि चुनौतियां और बाधाएं जीवन के अभिन्न अंग हैं। उनके बिना, जीवन अर्थहीन है। समस्याएं आपके व्यक्तित्व को आकार देती हैं, आपको लचीला बनाती हैं और आपको भविष्य की भूमिकाओं के लिए तैयार करती हैं। लेकिन यहां सार यह है कि आप अपने जीवन को कैसे समझते हैं। यदि व्यक्ति आशावादी है, तो वह आगे बढ़ेगा, लेकिन अगर उसके जीवन में निराशावाद हावी है तो निश्चित रूप से उसकी नाव किनारे तक नहीं पहुँचेगी। शीर्षक में उल्लिखित नाव जीवन की अवधारणा का प्रतीक है। जीवन अवसरों और चुनौतियों के सागर से कैसे गुजरता है, यही इस अनुच्छेद का विषय है।

जब हम ऐसे शिशु होते हैं जो स्कूल के बारे में नहीं जानते, तो यह वह समय होता है जब नाव कारखाने में खड़ी होती है और तब तक जल में अपनी यात्रा शुरू नहीं कर पाई होती है। इस अवस्था में आगे की यात्रा से बेख़बर शिशु केवल खेलने, सोने, खाने और इन्हीं क्रियाओं को दोहराने में व्यस्त होता है। जैसे ही स्कूल बैग खरीदा जाता है, किताबों पर जिल्द चढ़ने शुरु होते हैं और पानी की बोतल भरी जाने लगती है, जीवन की नाव अपनी अनजान और अपरिभाषित यात्रा पर चलने के लिए तैयार होने लगती है।

जीवन की नाव गंतव्य के बारे में अनजान है, हालांकि अंतिम गंतव्य मृत्यु है, लेकिन नाव ने आगे बढ़ने का निश्चय कर लिया है और नौकायन के लिए तैयार है। किसी भी दो पंक्तियों की यात्रा कभी भी एक समान नहीं होती है। जीवन की यात्रा व्यक्ति के मानसिक बुनावट से तय होती है कि क्या नाव में दुनिया की परिक्रमा करने की क्षमता है या क्या यह प्रारंभिक लहरों में कठोरता का सामना कर पाएगी ? यात्रा की सफलता जिस सामग्री से नाव बनाई गई है, उसकी गुणवत्ता से और डिज़ाइन की सटीकता से निर्धारित होती है।

जैसे-जैसे जीवन पानी पर हो रहे नौकायन के रूप में आगे बढ़ता है, ऐसे अवसर आते हैं जहां जीवन की गति अधिक होती है, कम से कम गड़बड़ी आती है और यात्रा सुचारू होती है। इन चरणों को अक्सर जीवन के सुनहरे चरण कहा जाता है। लोग चाहते हैं कि ऐसे क्षण लंबे समय तक रहें और उनके जीवन में अधिक बार उनकी आवृत्ति हो। लेकिन जैसा कि ज्ञानी लोग कहते हैं, जीवन में कुछ भी स्थायी नहीं होता।

कई बार जीवन अपना नौकायन करते समय चक्रवात, तूफान या आंधी का सामना करता है। यह परीक्षा का समय होता है यह परखने के लिए कि नाव कितनी लचीली और सुदृढ़ है। यह कठिन समय जीवन की यात्रा में आने वाली चुनौतियों, बाधाओं, परेशानियों आदि का प्रतिनिधित्व करता है। मिसाइल मैन के नाम से प्रसिद्ध और भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ एपीजे अब्दुल कलाम, इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण हैं। उन्होंने अपने जीवन में वैज्ञानिक बनने के लिए दृढ़ संकल्प किया था लेकिन उनकी वित्तीय स्थिति एक बड़ी बाधा थी। दयनीय वित्तीय स्थिति के आगे

आत्मसमर्पण करने बजाय उन्होंने दृढ़ और स्थिर खड़े रहने का विकल्प चुना। उन्होंने अपनी शिक्षा के वित्तपोषण के लिए समाचार पत्र वितरित करना शुरू कर दिया और आगे क्या हुआ यह इतिहास है।

ऐसे कई उदाहरण हैं जो साबित करते हैं कि नाव के आसपास का पानी कोई मुद्दा नहीं है, लेकिन नाव में प्रवेश करनेवाला पानी नाव के डूबने का कारण बनता है। केवल समस्याएं और बाधाएं जीवन की यात्रा को एक असफल मिशन नहीं बनाती हैं। यात्रा की सफलता या विफलता इस बात से तय होती है कि जीवन उसका सामना करने में कितनी अच्छी तरह सक्षम था। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जब स्वतंत्रता सेनानी ब्रिटिश शासन के अत्याचारों का सामना कर रहे थे, तब यह उनकी विशुद्ध इच्छाशक्ति और चट्टान की तरह ठोस दृढ़ संकल्प था जिसने उन्हें अटूट बना दिया। यह केवल स्वतंत्रता सेनानियों की इच्छा का परिणाम है कि भारत की स्वतंत्रता की नाव अपने लक्षित तट पर पहुंच पाई।

यह स्पष्ट है कि कुछ नाव अपने लक्षित तटों तक पहुंचती हैं जबकि कुछ कभी भी सूर्य की रोशनी नहीं देख पाती हैं। अवसाद, चिंता और मानसिक विकारों के मामलों में पूरी दुनिया में तेजी से वृद्धि देखी जा रही है। ऐसी समस्याओं से जूझते हुए की गई आत्महत्याएं वह समय होती है जब जीवन की नाव डूब जाती है। इंडिया हेल्थ रिपोर्ट 2021 के अनुसार, अवसाद और अन्य मानसिक विकार देश में आत्महत्या के पीछे प्रमुख कारण हैं। डूबती नावों को भावनात्मक समर्थन की एक व्यवस्था बनाना समय की मांग है। निरंतर देखभाल और समय पर उपचार से यह सुनिश्चित हो सकता है कि ये नावें अपने संबंधित तटों तक पहुंचें।

जीवन की यात्रा का पूरा उद्देश्य हमें इसके विभिन्न पहलुओं का अनुभव कराना और रिकॉर्ड करना है कि हमने उनका सामना कैसे किया। माइकल फेल्प्स, जो सर्वकालीन महान ओलंपियन के रूप में जाने जाते हैं, की कहानी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वह औस्तवाद (ऑस्टिज्म) से पीड़ित थे जिसके परिणामस्वरूप असामान्य व्यवहार करते थे। अपने मानसिक विकार को एक कमजोरी के रूप में स्वीकार करने के बजाय उन्होंने इसे अपनी मूल ताकत बनाने का फैसला किया। औस्तवाद से पीडित व्यक्ति अपने एकल लक्ष्य पर केंद्रित रहता है। फेल्प्स ने अपनी तैराकी पर इतना ध्यान केंद्रित किया कि वह अपनी बहन के विवाह को भी भूल गए क्योंकि वह समय तैराकी का था ! जीवन ने निश्चित रूप से उनके सामने एक चुनौती पेश की, लेकिन उन्होंने उस चुनौती का जवाब कैसे दिया, उससे यह तय हुआ कि जीवन की नाव डूबने की बजाय पानी पर सफलतापूर्वक नौकायन करेगी।

जीवन यात्रा की घटना प्रकृति में भी देखी जा सकती है। वायरस जीवित रहने के लिए खुद को उत्परिवर्तित करता है, बैक्टीरिया लगातार विकसित होता है ताकि एंटीबायोटिक दवाओं का विरोध किया जा सके, पौधे एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा करते हैं कि सदाबहार जंगलों या मियावाकी जंगलों में कैसे बढ़ा जाए। प्रकृति की अपनी चुनौतियां और बाधाएं हैं। लेकिन जो चीज मानव और प्रकृति को समान बनाती है वह यह है कि दोनों उनका जवाब देते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता का पूरा सार यह है कि बाधाओं के बीच कैसे आगे बढ़ा जाए। कृष्ण ने भिन्न-भिन्न परिस्थितियों के आधार पर अर्जुन को सलाह दी थी जिसका उद्देश्य महाभारत युद्ध की अंतिम सफलता था। प्राचीन काल का एक और उदाहरण यह है कि चाणक्य ने चंद्रगुप्त को बचपन से मौर्य साम्राज्य का राजा बनने के लिए कैसे प्रशिक्षित और निर्देशित किया।

यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि किसी भी चीज को कभी भी अपने जीवन में इतना बड़ा और हानिकारक न बनने दें कि यह आपकी नौकायन प्रक्रिया पर सवालिया निशान लगाए। कठिनाइयों का सामना करते हुए दृढ़ और शांत रहने की कोशिश करनी चाहिए और आने वाले समय के लिए हमेशा आशावादी और प्रगतिवादी रहना चाहिए। जीवन की नाव निश्चित रूप से सफल नौकायन करेगी और पानी आपकी बाधा बनने के बजाय मार्गदर्शक प्रकाश बनेगा।

"हिंदी भाषा का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है।" - महात्मा गांधी

मुंबई दर्शन

अजीत कुमार
आँ.प्र.प्र.

महाराष्ट्र की राजधानी मुंबई को 'सपनों का शहर' भी कहते हैं, जहाँ सैर-सपाटे के लिए कई शानदार पर्यटन स्थल मौजूद हैं। बीच (समुद्र तट) से लेकर बॉलीवुड तक, म्यूजियम और नेचर पार्क से लेकर धार्मिक स्थलों तक, यहाँ हर किसी के लिए कुछ-न-कुछ जरूर है।

मुंबई के बारे में कहा जाता है कि यह एक ऐसा शहर है जो कभी सोता नहीं है। इस शहर में पुराने जमाने के आईकॉनिक आर्किटेक्चर, आधुनिक ऊंची इमारतों, सांस्कृतिक एवं पारंपरिक संरचनाओं और झुग्गी बस्तियों का बेमिसाल तालमेल दिखाई देता है। हमेशा चहल-पहल वाली भारत की व्यावसायिक राजधानी में दुनिया भर के पर्यटक घूमने-फिरने के लिए आते है। मुंबई को अपनी लोकल ट्रेनों, स्ट्रीट फूड, महंगे रेस्टोरेंट और नाइटलाइफ के लिए जाना जाता है। मुंबई में सैर-सपाटे के लिए कई ऐसी शानदार जगहें हैं, जहाँ घूमने के बाद आपकी यात्रा यादगार और मजेदार बन जाएगी। वैसे देखा जाए तो सर्दियों में नवंबर से मार्च तक समय यहाँ सैर-सपाटे के लिए सबसे अच्छा माना जाता है। आइए, आप और हम मिलकर मुंबई के कुछ दर्शनीय स्थलों की सैर करते हैः-

1. **गेटवे ऑफ इंडिया** - मुंबई के सबसे बेहतरीन पर्यटन स्थलों में गेटवे ऑफ इंडिया का नाम शामिल है। अरब सागर के किनारे अपोलो बंदर तट पर बनाई गई यह आलीशान संरचना हमें याद दिलाती है कि, यह शहर भी कभी अंग्रेजों के अधीन था। बेसाल्ट के बने 26 मीटर ऊंचे इस प्रवेशद्वार के निर्माण में जीत की झलक दिखाने वाले रोमन आर्किटेक्चर के मेहराब के साथ-साथ पारंपरिक हिंदू और मुस्लिम डिजाइनों का उपयोग किया गया है। किंग जॉर्ज V और क्वीन मैरी 1911 में ब्रिटिश भारत आए थे, और उनके स्वागत के लिए ही इसे बनाया गया था। इसके मेहराब के पीछे सीढ़ियां बनी हैं, जो पर्यटकों को अरब सागर की ओर ले जाती हैं।

गेटवे ऑफ इंडिया आने वाले पर्यटक यहाँ नाव की सवारी, फेरी की सवारी या प्राइवेट याट की सवारी का आनंद ले सकते हैं। अगर आप समुद्र के खूबसूरत नज़ारों, ताज पैलेस होटल, डॉक (गोदी) और बंदरगाह को देखना चाहते हैं, तो यह आपके लिए सबसे अच्छी जगह है।

2. **चौपाटी और जुहू बीच** - मुंबई शहर समुद्र के किनारे बसा है। सैर-सपाटे के लिहाज से मुंबई के बीच, यानी समुद्र तट सबसे अच्छे पर्यटन स्थल हैं। दूर तक फैली रेत, अरब सागर का पानी, समुद्र और आकाश के मिलन का शानदार नजारा और शाम के समय बेहद मनभावन सूर्यास्त का दृश्य वाकई बेहद खास है। समुद्र के किनारे आराम फरमाने का आनंद शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता है और चमचमाते समुद्र का पानी देखने लायक होता है।

अवश्य घूमने वाली जगह की सूची में चौपाटी और जुहू बीच सबसे ऊपर है। मरीन ड्राइव के नजदीक स्थित 'चौपाटी' (गिरगाँव) बीच मुंबई के सबसे व्यस्त समुद्र तटों में से एक है, और यहाँ मिलने वाले अलग-अलग तरह के स्थानीय व्यंजन बेहद लजीज़ होते हैं। जुहू बीच की बात की जाए, तो यह मुंबई में सबसे ज्यादा भीड़-भाड़ वाला समुद्र तट है। इसकी लंबाई 6 किमी है और इस तरह यह मुंबई का सबसे लंबा बीच है।

बेहद जायकेदार स्ट्रीट फूड का स्वाद चखने के अलावा, पर्यटक यहाँ बनाना राइड्स, जेट स्की और बंपर राइड्स जैसे पानी के खेल का भी मजा ले सकते हैं। इसके अलावा मुंबई आने वाले पर्यटक गोरई बीच, वर्सोवा बीच, मार्वे मध और अक्सा बीच की सैर कर सकते हैं। पर्यटक दादर और चौपाटी में हाल ही में खोले गए डेक पर कुछ समय बिता सकते हैं, और यहाँ ताज़ी हवा के साथ-साथ चारों तरफ फैले बेहद खूबसूरत समुद्र के नजारे का आनंद ले सकते हैं।

3. **संजय गांधी नेशनल पार्क (एसजीएनपी)** – यह पार्क बोरीवली में स्थित है जिसे इस शहर की स्वच्छ हवा का केंद्र कहा जाता है। यह दुनिया का इकलौता ऐसा नेशनल पार्क (राष्ट्रीय उद्यान) है जो शहर के भीतर मौजूद है। यह मुंबई में घूमने के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक है। यह राष्ट्रीय उद्यान (नेशनल पार्क) कुल मिलाकर 103 वर्ग किलोमीटर के दायरे में फैला हुआ है, जिसकी देखरेख पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा की जाती है। हर साल यहाँ 20 लाख से ज्यादा लोग घूमने आते हैं। इकोलॉजिकल टूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए इस जंगल को पूरी तरह संरक्षित किया गया है, और यहाँ की सफारी में बाघ और शेर को देखना बेहद रोमांचक है।

एक ग्रीन बस किनारे पर लगी बाड़ के साथ-साथ लोगों को जंगल की सैर पर ले जाती है। इस जंगल में जानवर खुले में घूमते हैं, इसलिए पर्यटकों को जानवरों के हमले की संभावना से बचाने के लिए इन बसों को लोहे की सलाखों से पिंजरे की तरह बनाया जाता है। एसजीएनपी के साथ-साथ इसके नजदीक स्थित तुंगारेश्वर सेंचुरी (अभयारण्य) में अनुमानित तौर पर तकरीबन 40 तेंदुए रहते हैं। इसके अलावा यहाँ नेवले, चार सींग वाले हिरण (चौसिंगा), सांभर, माउस डियर (पिसूरी), जंगली सूअर, लंगूर, बंदर और तेंदुआ सहित कई अन्य जानवर रहते हैं। इस उद्यान में 1,000 से अधिक पौधों की प्रजातियां, स्तनधारियों की 40 प्रजातियां तथा पक्षियों, सरीसृपों, मछलियों और कीड़ों की अनगिनत प्रजातियां मौजूद हैं। इस उद्यान के भीतर पहली और 9वीं शताब्दी ईस्वी के बीच बनी कन्हेरी गुफाएँ मौजूद हैं, जो अब संरक्षित पुरातात्विक स्थलों की सूची में शामिल है। कन्हेरी में 109 छोटे-छोटे कमरों का समूह है, जिसके साथ-साथ एक प्रार्थना कक्ष, एक स्तूप, जलकुंड तथा उस वक्त वहाँ रहने वालों के लिए बड़ा-

सा हॉल भी बना हुआ है। इनमें बुद्ध और बोधिसत्व की बेहद खूबसूरत और नक्काशीदार मूर्तियां हैं। कन्हेरी गुफाओं का निर्माण बौद्ध भिक्षुओं द्वारा किया गया था, जो बौद्ध शिक्षा का केंद्र होने के साथ-साथ एक महत्वपूर्ण तीर्थ-स्थान भी था।

4. **श्री सिद्धिविनायक मंदिर** - मुंबई में घूमने के लिए सबसे प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है, साथ ही यह मुंबई में सबसे ज्यादा देखी जाने वाली जगहों में से एक है। भगवान गणेश का यह मंदिर सिद्धि-विनायक के नाम से मशहूर है जिसे सबकी मनोकामना पूरी करने वाला मंदिर माना जाता है, और इसी वजह से दुनिया भर से भक्त यहां भगवान गणेश के दर्शन के लिए आते हैं । मुंबा देवी मंदिर मुंबई का एक प्रसिद्ध तीर्थस्थल है, और मुंबई को यह नाम इसी मंदिर से मिला है। यह मंदिर इस क्षेत्र का पालन करने वाली देवी, भगवती मुंबादेवी को समर्पित है। मंदिर का निर्माण पहली बार सन 1675 में बोरी बंदर में हुआ था।

1737 में इसका पुनर्निर्माण किया गया जिसके बाद से यह मौजूदा स्थान पर स्थित है। मुंबई के कोली मछुआरे मुंबा देवी की पूजा करते हैं जो उन्हें अपना पालनहार मानते हैं। मंदिर में भगवती मुंबा देवी की प्राचीन मूर्ति स्थापित है, तथा देवी की मूर्ति को सोने के हार, चांदी के मुकुट और नथ से सजाया गया है।

5. **वीरमाता जीजाबाई भोसले चिड़ियाघर** - मुंबई आने वाले पर्यटकों को अपने बच्चों के साथ भायखला का चिड़ियाघर जरूर घूमना चाहिए, जिसे वीरमाता जीजाबाई भोसले उद्यान या मुंबई चिड़ियाघर के नाम से जाना जाता है। मुंबई के इस इकलौते चिड़ियाघर की स्थापना 1861 में हुई थी जो भारत के सबसे पुराने चिड़ियाघरों में से एक है। यहां कई तरह के पक्षी और जानवर रहते हैं, जिनमें हाथी, दरियाई घोड़े, नील-गाय, बंगाल के बाघ और तेंदुए, मगरमच्छ तथा अजगर शामिल हैं। हाल ही में सियोल के हम्बोल्ट पेंगुइन को भी यहां के जानवरों में शामिल किया गया है, जिन्हें दक्षिण अमेरिका में अपने कुदरती आवास का एहसास कराने के लिए बेहद ठंडे चेंबर्स में रखा जाता है।

चहचहाते पक्षियों की आवाज सुनते हुए हाल ही में बने एवियरी के बीच से गुजरने का अनुभव शानदार होता है। भायखला चिड़ियाघर के पानी वाले हिस्से को रानी बाग चिड़ियाघर के नाम से भी जाना जाता है, जिसमें पेलिकन, फ्लेमिंगो, एल्बिनो क्रो (सफेद कौवे), क्रेन, हीरॉन और स्टॉर्क की कुछ प्रजातियां रहती हैं। इसके परिसर में लगभग 50 एकड़ के क्षेत्र में पहले एक सुंदर बॉटनिकल गार्डन के साथ-साथ एक म्यूजियम भी है। बॉटनिकल गार्डन में 3000 से अधिक पेड़, जड़ी-बूटियाँ और फूलों के पौधे हैं। डॉ. भाऊ दाजी लाड म्यूजियम (इसे पहले विक्टोरिया

एंड अल्बर्ट म्यूजियम कहा जाता था) में मुंबई की कई प्राचीन कलाकृतियाँ, मूर्तियाँ और ऐतिहासिक तस्वीरें हैं, जिनमें काला घोड़ा की मूर्ति तथा एलीफेंटा द्वीप की गुफाओं की पत्थर से तराशी गई हाथी की मूर्ति शामिल है।

"राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिये आवश्यक है।"

- महात्मा गाँधी

राजभाषा अधिनियम 1976 की मुख्य बातें

सा.का.नि. 1052 --राजभाषा अधिनियम, 1963 (1963 का 19) की धारा 3 की उपधारा (4) के साथ पठित धारा 8 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थातः-

1. i. इन नियमों का संक्षिप्त नाम राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) संशोधन नियम, 2007 है।

   ii. ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. परिभाषाएं-- इन नियमों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न होः-

   a. 'अधिनियम' से राजभाषा अधिनियम, 1963 (1963 का 19) अभिप्रेत है;

   b. 'केन्द्रीय सरकार के कार्यालय' के अन्तर्गत निम्नलिखित भी है, अर्थातः-

      i. केन्द्रीय सरकार का कोई मंत्रालय, विभाग या कार्यालय;

      ii. केन्द्रीय सरकार द्वारा नियुक्त किसी आयोग, समिति या अधिकरण का कोई कार्यालय; और

      iii. केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में या नियंत्रण के अधीन किसी निगम या कम्पनी का कोई कार्यालय;

   c. 'कर्मचारी' से केन्द्रीय सरकार के कार्यालय में नियोजित कोई व्यक्ति अभिप्रेत है;

   d. 'अधिसूचित कार्यालय' से नियम 10 के उपनियम (4) के अधीन अधिसूचित कार्यालय, अभिप्रेत है;

   e. 'हिंदी में प्रवीणता' से नियम 9 में वर्णित प्रवीणता अभिप्रेत है ;

   i. "क्षेत्र क" से बिहार, छत्तीसगढ, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह संघ राज्य क्षेत्र' अभिप्रेत हैं; '

   j. "क्षेत्र ख" से गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत हैं;"

   k. क्षेत्र ग' से खंड (च) और (छ) में निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

   l. हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान' से नियम 10 में वर्णित कार्यसाधक ज्ञान अभिप्रेत है।

3. राज्यों आदि और केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से भिन्न कार्यालयों के साथ पत्रादि-

1. केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'क' में किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र को या ऐसे राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि असाधारण दशाओं को छोड़कर हिंदी में होंगे और यदि उनमें से किसी को कोई पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाते हैं तो उनके साथ उनका हिंदी अनुवाद भी भेजा जाएगा।

2. केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से--

i. क्षेत्र 'ख' में किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र को या ऐसे राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) को पत्रादि सामान्यतया हिंदी में होंगे और यदि इनमें से किसी को कोई पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाते हैं तो उनके साथ उनका हिंदी अनुवाद भी भेजा जाएगाः परन्तु यदि कोई ऐसा राज्य या संघ राज्य क्षेत्र यह चाहता है कि किसी विशिष्ट वर्ग या प्रवर्ग के पत्रादि या उसके किसी कार्यालय के लिए आशयित पत्रादि संबद्ध राज्य या संघ राज्यक्षेत्र की सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट अवधि तक अंग्रेजी या हिंदी में भेजे जाएं और उसके साथ दूसरी भाषा में उसका अनुवाद भी भेजा जाए तो ऐसे पत्रादि उसी रीति से भेजे जाएंगे ;

ii. क्षेत्र 'ख' के किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी व्यक्ति को पत्रादि हिंदी या अंग्रेजी में भेजे जा सकते हैं।

3. केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'ग' में किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि अंग्रेजी में होंगे।

4. उप नियम (1) और (2) में किसी बात के होते हुए भी, क्षेत्र 'ग' में केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'क' या 'ख' में किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि हिंदी या अंग्रेजी में हो सकते हैं। परन्तु हिंदी में पत्रादि ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिंदी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करे।

4. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि-

a. केन्द्रीय सरकार के किसी एक मंत्रालय या विभाग और किसी दूसरे मंत्रालय या विभाग के बीच पत्रादि हिंदी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

b. केन्द्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग और क्षेत्र 'क' में स्थित संलग्न या अधीनस्थ कार्यालयों के बीच पत्रादि हिंदी में होंगे और ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार, ऐसे कार्यालयों में हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिंदी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे संबंधित आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए, समय-समय पर अवधारित करे;

c. क्षेत्र 'क' में स्थित केन्द्रीय सरकार के ऐसे कार्यालयों के बीच, जो खण्ड (क) या खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट कार्यालयों से भिन्न हैं, पत्रादि हिंदी में होंगे;

d. क्षेत्र 'क' में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों और क्षेत्र 'ख' या 'ग'में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिंदी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

परन्तु ये पत्रादि हिंदी में ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या,हिंदी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करे ;

e. क्षेत्र 'ख' या 'ग' में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिंदी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

परन्तु ये पत्रादि हिंदी में ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या,हिंदी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करे ;

परन्तु जहां ऐसे पत्रादि—

i. क्षेत्र 'क' या क्षेत्र 'ख' किसी कार्यालय को संबोधित हैं वहां यदि आवश्यक हो तो, उनका दूसरी भाषा में अनुवाद, पत्रादि प्राप्त करने के स्थान पर किया जाएगा;

ii. क्षेत्र 'ग' में किसी कार्यालय को संबोधित है वहां, उनका दूसरी भाषा में अनुवाद, उनके साथ भेजा जाएगा;

परन्तु यह और कि यदि कोई पत्रादि किसी अधिसूचित कार्यालय को संबोधित है तो दूसरी भाषा में ऐसा अनुवाद उपलब्ध कराने की अपेक्षा नहीं की जाएगी।

5. हिंदी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर—

नियम 3 और नियम 4 में किसी बात के होते हुए भी, हिंदी में पत्रादि के उत्तर केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से हिंदी में दिए जाएंगे।

6. हिंदी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग-

अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसी दस्तावेजें हिंदी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार की जाती हैं, निष्पादित की जाती हैं और जारी की जाती हैं।

7. आवेदन, अभ्यावेदन आदि-

i. कोई कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिंदी या अंग्रेजी में कर सकता है।

ii. जब उपनियम (1) में विनिर्दिष्ट कोई आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिंदी में किया गया हो या उस पर हिंदी में हस्ताक्षर किए गए हों, तब उसका उत्तर हिंदी में दिया जाएगा।

iii. यदि कोई कर्मचारी यह चाहता है कि सेवा संबंधी विषयों (जिनके अन्तर्गत अनुशासनिक कार्यवाहियां भी हैं) से संबंधित कोई आदेश या सूचना, जिसका कर्मचारी पर तामील किया जाना अपेक्षित है, यथास्थिति, हिंदी या अंग्रेजी में होनी चाहिए तो वह उसे असम्यक विलम्ब के बिना उसी भाषा में दी जाएगी।

8. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में टिप्पणों का लिखा जाना -

i. कोई कर्मचारी किसी फाइल पर टिप्पण या कार्यवृत्त हिंदी या अंग्रेजी में लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करे।

ii. केन्द्रीय सरकार का कोई भी कर्मचारी, जो हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखता है, हिंदी में किसी दस्तावेज के अंग्रेजी अनुवाद की मांग तभी कर सकता है, जब वह दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है, अन्यथा नहीं।

iii. यदि यह प्रश्न उठता है कि कोई विशिष्ट दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है या नहीं तो विभाग या कार्यालय का प्रधान उसका विनिश्चय करेगा।

iv. उपनियम (1) में किसी बात के होते हुए भी, केन्द्रीय सरकार, आदेश द्वारा ऐसे अधिसूचित कार्यालयों को विनिर्दिष्ट कर सकती है जहां ऐसे कर्मचारियों द्वारा,जिन्हें हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है, टिप्पण, प्रारूपण और ऐसे अन्य शासकीय प्रयोजनों के लिए, जो आदेश में विनिर्दिष्ट किए जाएं, केवल हिंदी का प्रयोग किया जाएगा ।

9. हिंदी में प्रवीणता-

यदि किसी कर्मचारी ने-

i. मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिंदी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है; या

ii. स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिंदी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो; या

iii. यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है;

तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है ।

10. हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान-

1. a. यदि किसी कर्मचारी ने-

i. मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिंदी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है; या

ii. केन्द्रीय सरकार की हिंदी परीकाा योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या यदि उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के सम्बन्ध में उस योजना के अन्तर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है, वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या

iii. केन्द्रीय सरकार द्वारा उस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या

b. यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है; तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

2. यदि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों में से अस्सी प्रतिशत ने हिंदी का ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उस कार्यालय के कर्मचारियों के बारे में सामान्यतया यह समझा जाएगा कि उन्होंने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

3. केन्द्रीय सरकार या केन्द्रीय सरकार द्वारा इस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अधिकारी यह अवधारित कर सकता है कि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय के कर्मचारियों ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है या नहीं।

4. केन्द्रीय सरकार के जिन कार्यालयों में कर्मचारियों ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे;

परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार की राय है कि किसी अधिसूचित कार्यालय में काम करने वाले और हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों का प्रतिशत किसी तारीख में से उपनियम (2) में विनिर्दिष्ट प्रतिशत से कम हो गया है, तो वह राजपत्र में अधिसूचना द्वारा घोषित कर सकती है कि उक्त कार्यालय उस तारीख से अधिसूचित कार्यालय नहीं रह जाएगा ।

11. मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री आदि-

1. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिंदी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।

2. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्ररूप और शीर्षक हिंदी और अंग्रेजी में होंगे।

3. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिंदी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी;

परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार ऐसा करना आवश्यक समझती है तो वह, साधारण या विशेष आदेश द्वारा, केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय को इस नियम के सभी या किन्हीं उपबन्धों से छूट दे सकती है।

12 अनुपालन का उत्तरदायित्व-

1. केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह-

   i. यह सुनिश्चित करे कि अधिनियम और इन नियमों के उपबंधों और उपनियम (2) के अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है; और

   ii. इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के लिए उपाय करे।

2. केन्द्रीय सरकार अधिनियम और इन नियमों के उपबन्धों के सम्यक अनुपालन के लिए अपने कर्मचारियों और कार्यालयों को समय-समय पर आवश्यक निदेश जारी कर सकती है।

भाषा ही किसी भी राष्ट्र का जीवन है और भारत का जीवन हिंदी है।

– पुरुषोत्तमदास टंडन

आपके पत्र : आपकी प्रतिक्रियाएँ

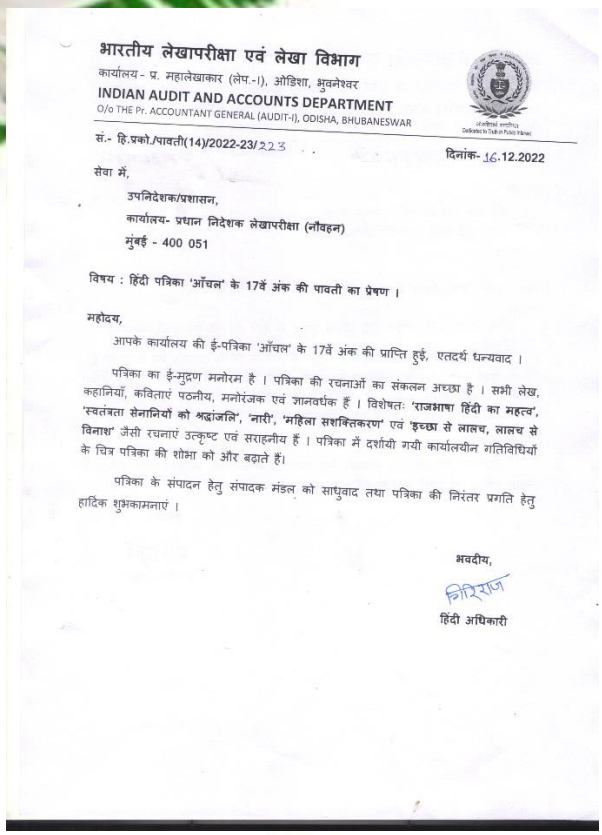

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय - प्र. महालेखाकार (लेप.-I), ओडिशा, भुवनेश्वर
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
O/o THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I), ODISHA, BHUBANESWAR

सं.- हि.प्रको./पावती(14)/2022-23/223 दिनांक- 16.12.2022

सेवा में,

उपनिदेशक/प्रशासन,
कार्यालय- प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन)
मुंबई - 400 051

विषय : हिंदी पत्रिका 'आँचल' के 17वें अंक की पावती का प्रेषण ।

महोदय,

आपके कार्यालय की ई-पत्रिका 'आँचल' के 17वें अंक की प्राप्ति हुई, एतदर्थ धन्यवाद ।

पत्रिका का ई-मुद्रण मनोरम है । पत्रिका की रचनाओं का संकलन अच्छा है । सभी लेख, कहानियाँ, कविताएं पठनीय, मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक हैं । विशेषतः **'राजभाषा हिंदी का महत्व'**, **'स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि'**, **'नारी'**, **'महिला सशक्तिकरण'** एवं **'इच्छा से लालच, लालच से विनाश'** जैसी रचनाएं उत्कृष्ट एवं सराहनीय हैं । पत्रिका में दर्शायी गयी कार्यालयीन गतिविधियों के चित्र पत्रिका की शोभा को और बढ़ाते हैं।

पत्रिका के संपादन हेतु संपादक मंडल को साधुवाद तथा पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीय,

गिरिराज

हिंदी अधिकारी

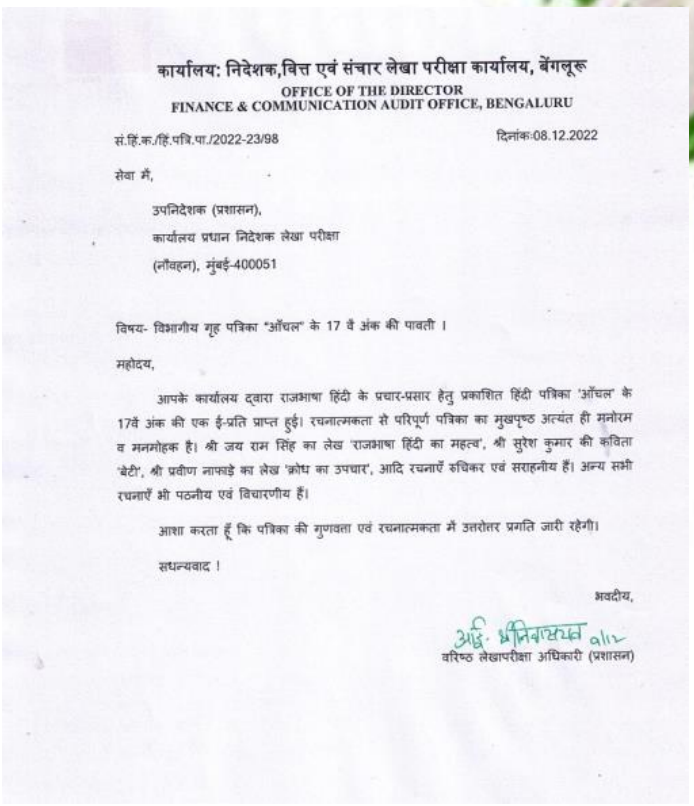

कार्यालय: निदेशक,वित्त एवं संचार लेखा परीक्षा कार्यालय, बेंगलूरु
OFFICE OF THE DIRECTOR
FINANCE & COMMUNICATION AUDIT OFFICE, BENGALURU

सं.हिं.क./हिं.पत्रि.पा./2022-23/98 दिनांक:08.12.2022

सेवा में,

उपनिदेशक (प्रशासन),
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा
(नौवहन), मुंबई-400051

विषय- विभागीय गृह पत्रिका "आँचल" के 17 वें अंक की पावती ।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'आँचल' के 17वें अंक की एक ई-प्रति प्राप्त हुई। रचनात्मकता से परिपूर्ण पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत ही मनोरम व मनमोहक है। श्री जय राम सिंह का लेख 'राजभाषा हिंदी का महत्व', श्री सुरेश कुमार की कविता 'बेटी', श्री प्रवीण नाफाड़े का लेख 'क्रोध का उपचार', आदि रचनाएँ रुचिकर एवं सराहनीय हैं। अन्य सभी रचनाएँ भी पठनीय एवं विचारणीय हैं।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी।

सधन्यवाद !

भवदीय,

अद्वि. श्रीनिवासन 9/12

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

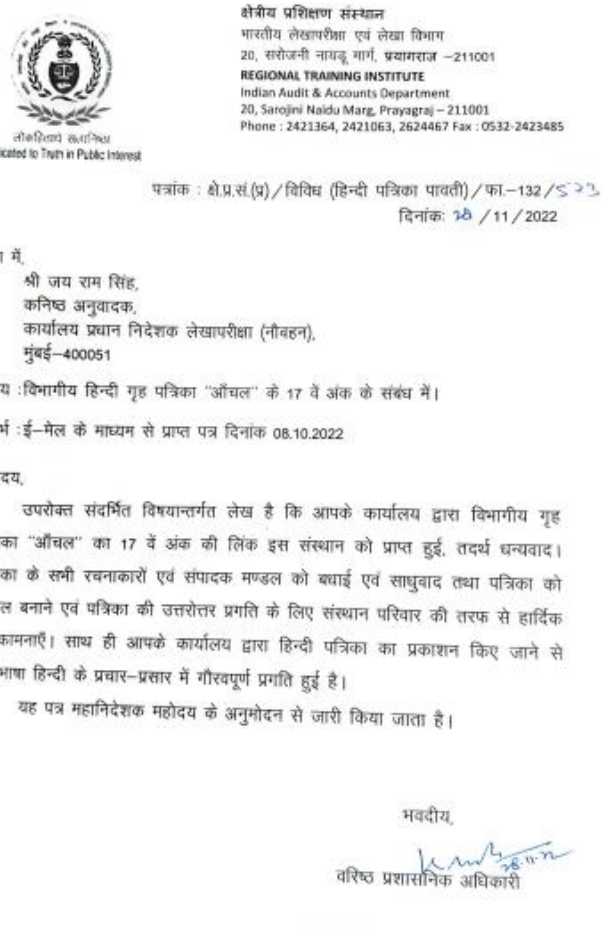

क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
20, सरोजनी नायडू मार्ग, प्रयागराज –211001
REGIONAL TRAINING INSTITUTE
Indian Audit & Accounts Department
20, Sarojini Naidu Marg, Prayagraj – 211001
Phone : 2421364, 2421063, 2624467 Fax : 0532-2423485

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

पत्रांक : क्षे.प्र.सं.(प्र)/विविध (हिन्दी पत्रिका पावती)/फा.–132/573
दिनांक: 28 / 11 / 2022

सेवा में,

श्री जय राम सिंह,
कनिष्ठ अनुवादक,
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन),
मुंबई–400051

विषय :विभागीय हिन्दी गृह पत्रिका "आँचल" के 17 वें अंक के संबंध में।

संदर्भ :ई–मेल के माध्यम से प्राप्त पत्र दिनांक 08.10.2022

महोदय,

उपरोक्त संदर्भित विषयान्तर्गत लेख है कि आपके कार्यालय द्वारा विभागीय गृह पत्रिका "आँचल" का 17 वें अंक की लिंक इस संस्थान को प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को बधाई एवं साधुवाद तथा पत्रिका को सफल बनाने एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए संस्थान परिवार की तरफ से हार्दिक शुभकामनाएँ। साथ ही आपके कार्यालय द्वारा हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन किए जाने से राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में गौरवपूर्ण प्रगति हुई है।

यह पत्र महानिदेशक महोदय के अनुमोदन से जारी किया जाता है।

भवदीय,

28.11.22

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

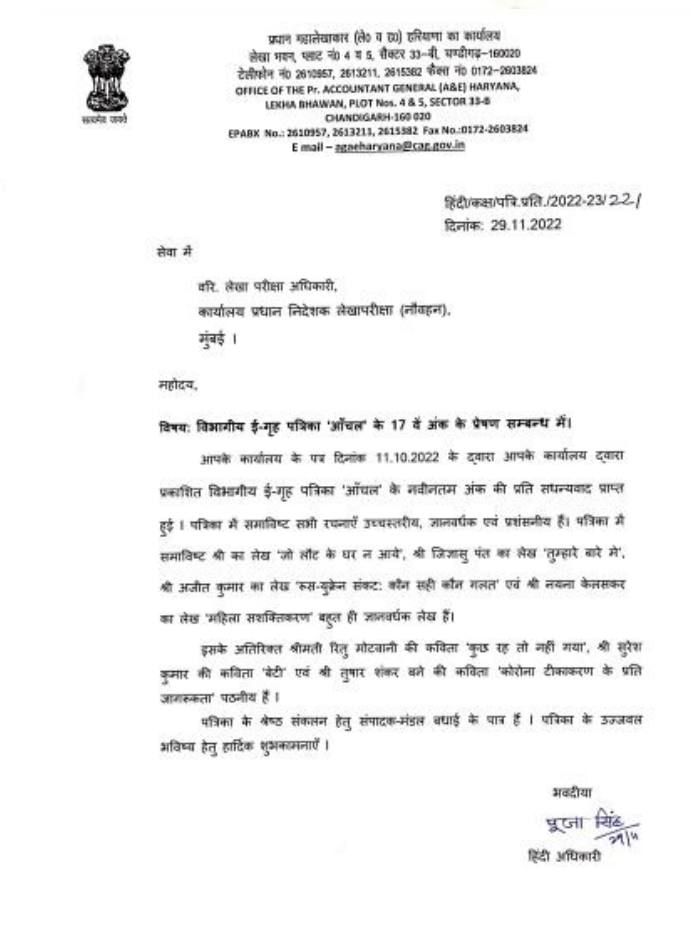

प्रधान महालेखाकार (ले० व ह०) हरियाणा का कार्यालय
लेखा भवन, प्लाट नं0 4 व 5, सैक्टर 33–बी, चण्डीगढ़–160020
टेलीफोन नं0 2610957, 2613211, 2615382 फैक्स नं0 0172–2603824
OFFICE OF THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) HARYANA,
LEKHA BHAWAN, PLOT Nos. 4 & 5, SECTOR 33-B
CHANDIGARH-160 020
EPABX No.: 2610957, 2613211, 2615382 Fax No.:0172-2603824
E mail – agaeharyana@cag.gov.in

सत्यमेव जयते

हिंदी/कक्ष/पत्रि.प्रति./2022-23/22/
दिनांक: 29.11.2022

सेवा में

वरि. लेखा परीक्षा अधिकारी,
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन),
मुंबई ।

महोदय,

विषय: विभागीय ई-गृह पत्रिका 'आँचल' के 17 वें अंक के प्रेषण सम्बन्ध में।

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 11.10.2022 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित विभागीय ई-गृह पत्रिका 'आँचल' के नवीनतम अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्री का लेख 'जो लौट के घर न आये', श्री जिज्ञासु पंत का लेख 'तुम्हारे बारे में', श्री अजीत कुमार का लेख 'रूस-युक्रेन संकट: कौन सही कौन गलत' एवं श्री नयना केलसकर का लेख 'महिला सशक्तिकरण' बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख हैं।

इसके अतिरिक्त श्रीमती रितु मोटवानी की कविता 'कुछ रह तो नहीं गया', श्री सुरेश कुमार की कविता 'बेटी' एवं श्री तुषार शंकर बने की कविता 'कोरोना टीकाकरण के प्रति जागरूकता' पठनीय हैं ।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीया

पूजा सिंह 29/11

हिंदी अधिकारी

File No./

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन
भुवनेश्वर-751017(ओड़िशा)

सत्यमेव जयते

Dedicated to Truth in Public Interest

स.- रा.भा.अ./पत्रिका/2022-23/ दिनांक- 10.11.2022

सेवा में,
उपनिदेशक (प्रशासन),
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन),
6ठी एवं 7वीं मंजिल, आर.टी.आई भवन,प्लाट-सी.-2,
जी. एन. ब्लाक,बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स, बांद्रा (पूर्व),
मुंबई – 400051
ईमेल- pdashippingmum@cag.gov.in

विषय- हिंदी गृह पत्रिका **"आँचल"** के **17वें** अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित विभागीय हिंदी गृह पत्रिका **"आँचल"** का **17वाँ** अंक ई-पत्रिका के रूप में प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रुपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर श्रीमती नयना केळसकर द्वारा रचित लेख **'महिला सशक्तिकरण'**, श्री जिज्ञासु पंत द्वारा रचित संस्मरण **'तुम्हारे बारे में'** श्री जय राम सिंह द्वारा रचित कविता **'नारी'** बहुत अच्छी लगी।

इसके अतिरिक्त इस पत्रिका में आपका नियमित स्तंभ **'स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि'** तथा **'जो लौट के घर न आए'** अत्यंत सराहनीय है।

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह पत्र निदेशक लेखापरीक्षा के अनुमोदन से जारी किया गया है।

भवदीया,

(कीर्ति श्री)
हिंदी अधिकारी

दूरभाष सं.-0674-2303511 ई-मेल- pdarlyecoastr@cag.gov.in / rajbhasha.pda@gmail.com

---

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.), पश्चिम बंगाल
Indian Audit And Accounts Department
Principal Accountant General (A&E), West Bengal

सत्यमेव जयते

संख्या/ No. प्रशा. हिंदी सेल/पत्रिका/2022-23/151

दिनांक/ Dated. 07.11.2022

सेवा में,
उप निदेशक/ प्रशासन
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन) का कार्यालय
मुंबई - 400 051

विषय: कार्यालयीन हिन्दी पत्रिका 'आँचल' के सत्रहवें अंक की पावती एवं अभिमत ।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक राजभाषा पत्रिका 'आँचल' के सत्रहवें अंक वर्ष - 2022 की एक ई- प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद ।

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्च स्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं । 'जो लौट के घर न आए' - यह नियमित स्तम्भ आपके पत्रिका परिवार द्वारा आरंभ किया गया है जिसके माध्यम से देश के वीर सपूतों के अप्रतिम साहस और बलिदान से हम सब सरलता से अवगत हो पा रहे हैं । श्री जय राम सिंह की कविता 'नारी', श्रीमती रितु मोटवानी की कविता 'कुछ रह तो नहीं गया', बहुत ही मर्मस्पर्शी लगी । श्री तुषार शंकर हर्ने का 'कोरोना टीकाकरण के प्रति जागरूकता' संकलन मनोरंजक लगा। श्री सुरेश कुमार की कहानी 'वाद से छुटकारा', श्री अंकित आज़ाद का लेख 'कृष्णा से आवास, आवास से विनाश', बहुत ही रोचक लगी। पत्रिका के आवरण पृष्ठ के साथ-साथ, मुख पृष्ठ और कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित सभी छायाचित्र बहुत ही अच्छी लगी ।

पत्रिका के उत्तम सम्पादन एवं संकलन हेतु सम्पादन मंडल के सभी सदस्यों को साधुवाद तथा पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीय,

(चन्दन कुमार बड़ाई)
हिन्दी अधिकारी प्रभा. हिंदी सेल
एवं सम्पादक 'वन्दे मातरम्'

ट्रेजरी बिल्डिंग्स, 2, गवर्नमेंट प्लेस, वेस्ट, कोलकाता - 700 001
Treasury Buildings, 2, Government Place West, Kolkata - 700 001
Phone: (033) 2213 8000, Fax: (033) 2248-7849
e-mail: [illegible] Web Site: http://agwb.cag.gov.in

सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा,
प्लॉट नं. 5, सैक्टर 33-बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020
OFFICE OF THE
PR. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)
HARYANA
PLOT NO.5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020.
संख्या: हिंदी कक्ष/पत्रिका/प्रतिक्रिया/2022-23/169
दिनांक: 11 .10.2022

सेवा में,

उप निदेशक (प्रशा.),
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, (नौवहन), मुंबई
क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान भवन,
सातवां मंजिल, प्लॉट नो. सी-2,
जी.एन. ब्लॉक, बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स,
मुंबई-400051

विषय: **विभागीय गृह पत्रिका 'आंचल' के पी.डी.एफ. और लिंक का प्रेषण।**

महोदय,

आपके द्वारा प्रेषित पत्र संख्या: पीडीए(नौवहन)/प्रशा./वि.प./आंचल/2022-23/887 दिनांक 06.10.2022 के द्वारा आपके कार्यालय की विभागीय गृह पत्रिका 'आंचल' के पी.डी.एफ. और लिंक प्राप्त हुआ है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्च कोटि की हैं। 'जो लौट के घर न आए', 'बेटी', 'कोरोना टीकाकरण के प्रति जागरूकता', 'महिला सशक्तिकरण' एवं 'रूस-यूक्रेन संकट: कौन सही कौन गलत' आदि रचनाएं विशेष रूप से सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। उत्कृष्ट संयोजन एवं संपादन के लिए संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

11/10/2022

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(हिंदी व प्रशिक्षण कक्ष)

कार्यालय महानिदेशक, वाणिज्यिक लेखापरीक्षा , मुंबई
Office of the Director General of Commercial Audit, Mumbai
सी-25, ऑडिट भवन, 8वाँ तल, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स बांद्रा, मुंबई -400 051
C-25, Audit Bhavan, 8th Floor, Bandra Kurla Complex Bandra, Mumbai- 400051
फैक्स -022 26573814 टेलीफोन नं .022 26573813 ईमेल pdcamumbai@cag.gov.in

सं.डीजीसीए./प्रशा./हिंदी पत्रिका/ 672 दि. 31/10/2022

सेवा में,
संपर्क अधिकारी(राजभाषा)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा(नौवहन),
मुंबई

विषय- हिंदी पत्रिका 'आँचल' के 17वें अंक के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'आँचल' के 17वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सम्मिलित रचनाएं रुचिकर एवं ज्ञानप्रद हैं। "भारत के महान स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति श्रद्धांजलि शृंखला" तथा "जो लौट के घर न आए" की प्रस्तुति अत्यंत सराहनीय है। पत्रिका में सम्मिलित विभिन्न विषयों से संबंधित रचनाएं भिन्न-भिन्न विषयों के संबंध में जानकारी प्रदान करती हैं। विभिन्न गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र का प्रस्तुतीकरण सराहनीय है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

भवदीया,

व.लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशा.

File No..../..-1//-11011/-196/2018-22

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) राजस्थान, जयपुर

क.-राजभाषा/ले.प.-I/एच-11011/के-196/प्रतिक्रिया/2018-23 दिनांक- 18/10/2022

उप-निदेशक (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन),
मुंबई।

विषय- हिन्दी गृह पत्रिका "आँचल" के 17वें अंक की प्रतिक्रिया का प्रेषण।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका "आँचल" के 17वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष आभार।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं प्रासंगिक एवं विषयानुकूल हैं। रचनाओं के संकलन की दृष्टि से यह अंक संग्रहणीय है। हिंदी प्रकोष्ठ का लेख "जो लौट के घर न आए", श्री जय राम सिंह की कविता "नारी", श्री अजीत कुमार का लेख "रूस यूक्रेन संकट:कौन सही कौन गलत" विशेष रूप से प्रशंसनीय है।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

(अरुण कुमार शर्मा)
Welfare Officer
राजभाषा अनुभाग

File No.:/22/2022-23

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र,नागपुर 440001

संख्या.राजभाषा 8(II)/2022-23/जा.क्र. ....
दिनांक:- /10/2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा,
नौवहन, मुंबई-400051
विषय : हिंदी ई-पत्रिका 'आँचल' के 17वें संस्करण पर प्रतिक्रिया संबंधी ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी ई-पत्रिका 'आँचल' के 17वें संस्करण की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद ।

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कविताएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं । विशेषकर श्री सुरेश कुमार, लेखापरीक्षक की रचना 'बेटी', श्री तरुण बजाज, स.ले.प.अ. का लेख 'अपेक्षा' तथा श्री प्रवीण नाफड़े, व. लेखापरीक्षक का लेख 'क्रोध का उपचार' उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं । पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

WASIM MINHAS, HO(AMG-I HINDI CELL)-WM, HINDI CELL
हिंदी अधिकारी

चित्र बोलते हैं

द्वितीय सर्वश्रेष्ठ प्रबंधित कार्यालय का पुरस्कार भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय से ग्रहण करते हुए महानिदेशक महोदय

ऑडिट दिवस 2022 के अवसर पर महानिदेशक महोदय का सम्मानपूर्वक स्वागत

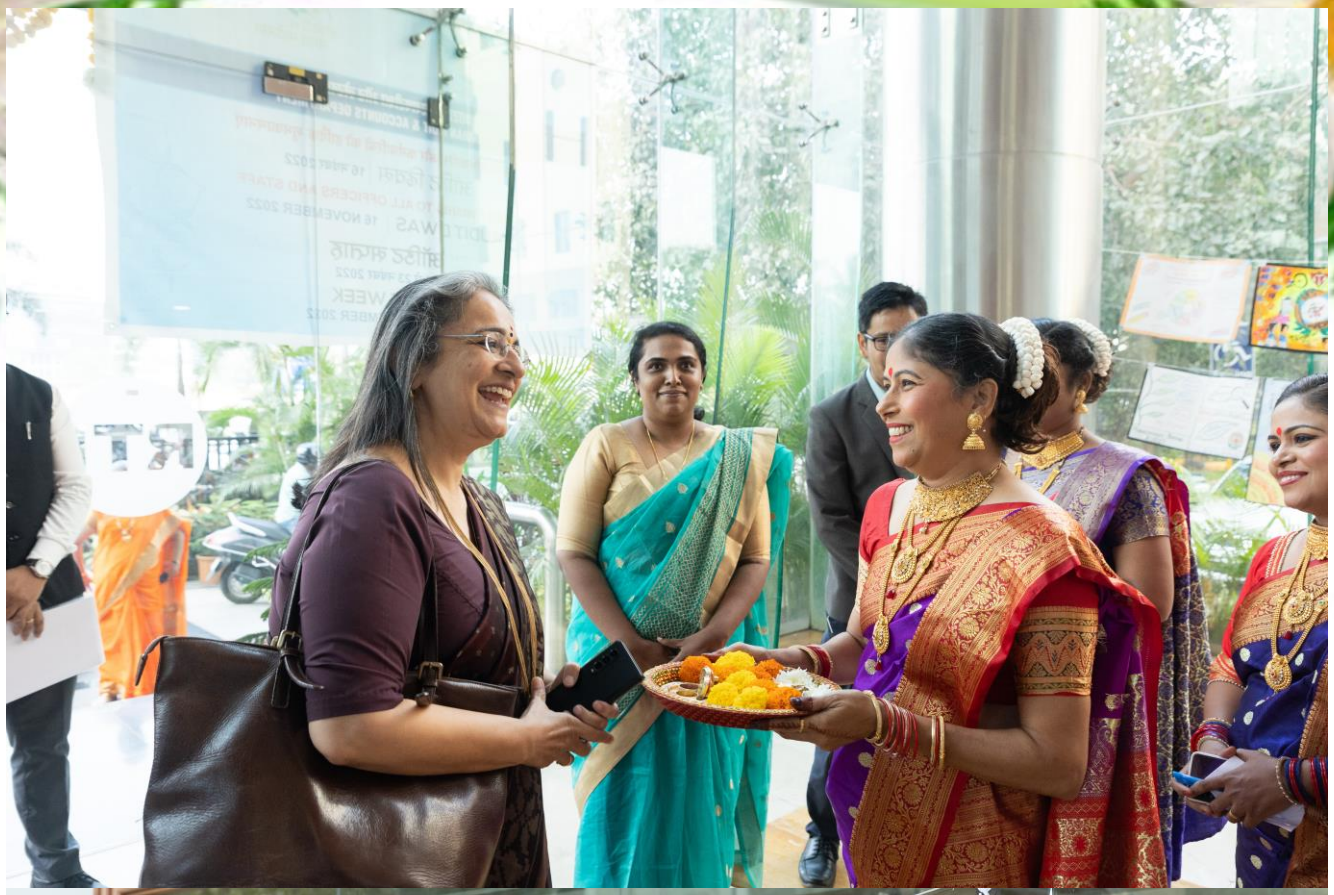

ऑडिट दिवस 2022, मुंबई की मुख्य अतिथि श्रीमती माधवी पुरी बुच, अध्यक्ष, भारती प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड स्वागत करते हुए महानिदेशक महोदय एवं अन्य गण्यमान्य अतिथिगण

ऑडिट दिवस 2022, मुंबई की मुख्य अतिथि श्रीमती माधवी पुरी बुच, अध्यक्ष, भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड का व्याख्यान एवं उसके उपरांत कुछ हँसी-खुशी के पल

ऑडिट दिवस 2022, मुंबई की प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करते हुए

केक काटकर नववर्ष 2023 का स्वागत करते महानिदेशक महोदय और अन्य कार्मिकगण

राजभाषा हिंदी का प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हिंदी पखवाड़ा समारोह का आयोजन एवं विभागीय पत्रिका "आँचल" का विमोचन

'कार्यस्थलों पर लैंगिक उत्पीड़न के खिलाफ जागरूकता' विषय पर व्याख्यान देती श्रीमती मंगला मराठे

1. केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा आयोजित अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम 2022 में इस कार्यालय के श्री जय राम सिंह, कनिष्ठ अनुवादक ने स्वर्ण पदक जीता।

2. कार्यालय के स्थानांतरित अधिकारियों का विदाई समारोह

राजभाषा हिन्दी की प्रगति की समीक्षा
(जुलाई 2022 से दिसम्बर 2022)

1. राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथा संशोधित 1967) की धारा 3(3) के अंतर्गत विनिर्दिष्ट कागजात: उक्त नियम के अंतर्गत इस वर्ष के दौरान कुल **234** कागजात जारी किये गए। इस कार्यालय में कार्यालय-आदेश, परिपत्र, सूचना, अनुस्मारक आदि सभी कागजात द्विभाषी रूप में ही जारी किये जाते हैं।

2. हिंदी में प्राप्त पत्रों की स्थिति (राजभाषा नियम - 5) - प्राप्त पत्रों का जवाब शत्-प्रतिशत हिंदी में देना अनिवार्य है। इस कार्यालय में हिंदी में प्राप्त पत्रों के जवाब केवल हिंदी में ही दिए जाते हैं। इस वर्ष में हिंदी में प्राप्त पत्रों की संख्या **626** रही। इनमें से **110** के जवाब हिंदी में दिए गए, 05 पत्रों के जवाब अँग्रेजी में दिए गए तथा शेष **511** पत्र फाइल किए गए।

3. अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों की स्थिति: इस वर्ष में कार्यालय को "क" तथा "ख" क्षेत्र से अंग्रेजी में कुल **1048** पत्रों की प्राप्ति हुई। इनमें से **67** पत्रों के जवाब अंग्रेजी में तथा **249** पत्रों के जवाब हिंदी में दिया गया तथा शेष **732** पत्र फाइल किए गए।

4. कार्यालय द्वारा प्रेषित पत्र: राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रमानुसार **क** एवं **ख** क्षेत्र में स्थित कार्यालयों के साथ क्रमशः **90 प्रतिशत** एवं **90 प्रतिशत** पत्राचार हिंदी में करना तथा **ग** क्षेत्र के साथ **55 प्रतिशत** पत्राचार हिंदी में करना अनिवार्य है। इस कार्यालय द्वारा इस वर्ष में **क, ख एवं ग** क्षेत्रों को प्रेषित पत्रों का प्रतिशत **क्रमशः 99.36%, 95.60% एवं 100%** रहा।

5. हिंदी में लिखी गईं टिप्पणियों की स्थिति: राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रमानुसार **क** क्षेत्र में **75 प्रतिशत, ख** क्षेत्र में **50 प्रतिशत** तथा **ग** क्षेत्र में **30 प्रतिशत** टिप्पणियाँ हिंदी में लिखा जाना अनिवार्य है। इस छमाही में कुल **4363** टिप्पणियाँ लिखी गईं, जिनमें से हिंदी में **3310** तथा शेष **1053** अँग्रेजी में थीं। इस कार्यालय की वर्तमान छमाही के हिंदी में टिप्पण लेखन का **प्रतिशत 75.86** रहा जो कि लक्ष्य से अधिक है।

6. अर्धवार्षिक गृह-पत्रिका "आँचल" का प्रकाशन: श्री गुलजारी लाल, महानिदेशक द्वारा कार्यालय की गृह-पत्रिका **"आँचल"** के अठारहवें ऑनलाइन अंक का विमोचन **जनवरी 2023** में किया गया।

7. हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन: इस कार्यालय द्वारा महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई के साथ संयुक्त रूप से हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है। वित्तीय वर्ष के दौरान प्रत्येक तिमाही में एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन अनिवार्यतः किया जाता है। जुलाई से सितम्बर 2022 की तिमाही में **26.09.2022** को तथा अक्तूबर से दिसम्बर, 2021 की तिमाही में **06.12.2022** को हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

8. पारंगत प्रशिक्षण का आयोजन: राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित हिंदी प्रशिक्षण संबंधी लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु कार्यालयीन कार्यों एवं प्रशिक्षण में समन्वय स्थापित करने के लिए कार्मिकों के समय एवं ऊर्जा की बचत करने के उद्देश्य से यह कार्यालय प्राथमिकता के आधार पर अपने कार्मिकों को पारंगत प्रशिक्षण के लिए नामित करता है। वर्तमान में **जुलाई से नवंबर 2022** के सत्र में इस कार्यालय के **सात** कार्मिक पारंगत परीक्षा

में उत्तीर्ण घोषित किए गए हैं। वर्तमान में कार्यालय के पाँच कार्मिक पारंगत प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। भविष्य में भी अधिक से अधिक कार्मिकों को हिंदी प्रशिक्षणों में नामित करने का प्रयास किया जाएगा।

9. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), मुंबई: नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मुंबई (पश्चिम रेलवे, प्रधान कार्यालय) की दिनांक 19.10.2022 को आयोजित राजभाषा की छमाही बैठक में इस कार्यालय के श्री ज्योतिमय बाईलुंग, उप निदेशक (प्रशासन) एवं श्री जय राम सिंह, कनिष्ठ अनुवादक ने सहभागिता की।

10. हिंदी प्रशिक्षण: इस कार्यालय के हिंदी प्रशिक्षण हेतु पात्र कार्मिकों में से **27** कार्मिकों को **पारंगत** प्रशिक्षण प्राप्त है जबकि **05** कार्मिक पारंगत प्रशिक्षणाधीन हैं तथा **27 कार्मिक हिंदी में प्रवीणता प्राप्त** हैं जिन्हें प्रति वर्ष कार्यालय प्रधान के हस्ताक्षर से हिंदी में कार्य करने हेतु **राजभाषा नियम, 1976 के नियम 8 (4)** के अंतर्गत आदेश दिया जाता है। इस कार्यालय के शेष अन्य सभी कार्मिकों को हिंदी का कार्य साधक ज्ञान प्राप्त है।

प्रस्तुतकर्त्ता: हिंदी प्रकोष्ठ

विविधा

(अवधि: 01 जुलाई, 2022 से 31 दिसंबर 2022 तक)

नियुक्तियाँ/योगदान

क्र.सं.	नाम	पदनाम	दिनांक
1.	सुश्री प्रिती सूर्यवंशी	लिपिक/टंकक	08.07.2022
2.	श्री नितिन नागोसे	कल्याण सहायक	01.09.2022
3.	श्री ज्योतिमय बाइलुंग	उप निदेशक (प्रशासन)	06.09.2022
4.	श्री गुलशन कुमार	स.ले.प.अ.	14.10.2022
5.	श्री रोहित नागर	स.ले.प.अ.	14.10.2022
6.	श्री ज्योतिमय बाइलुंग	उप निदेशक	06.09.2022
7.	श्री गुलजारी लाल	महानिदेशक	07.11.2022
8.	श्री प्रवीण कुमार दुबे	व.ले.प.अ.	24.11.2022
9.	श्रीमती विन्नी चौधरी	स.ले.प.अ.	02.12.2022
10.	श्री मयंक बिष्ट	स.ले.प.अ.	12.12.2022

पदोन्नतियाँ

क्र.सं.	नाम	पदनाम	दिनांक
1.	श्री राहुल चौधरी	स.ले.प.अ.	01.12.2022

स्थानान्तरण

क्र.सं.	नाम	पदनाम	कहाँ
1.	श्री पी.वी. हरि कृष्णा	प्रधान निदेशक	मुंबई
2.	श्री अंकित शर्मा	स.ले.प.अ	दिल्ली
3.	श्री उदेश कुमार	स.ले.प.अ	दिल्ली
4.	श्री विशू बंसल	स.ले.प.अ	चंडीगढ़
5.	श्री अर्पित कुमार	स.ले.प.अ	मुंबई
6.	श्रीमती दिव्या	स.ले.प.अ.	दिल्ली

सेवानिवृत्ति

क्र.सं.	नाम	पदनाम	दिनांक
	श्री वी.एस.के. नम्बूदिरी	निदेशक (प्रशासन)	31.07.2022
1.	श्रीमती मीनल वी कुलकर्णी	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	11.08.2022
2.	श्री एस. आर. शकट	सहायक पर्यवेक्षक	31.10.2022
3.	श्री अंकित कुमार (त्यागपत्र)	ले.प	02.12.2022

"आँचल" परिवार नव-नियुक्त और योगदान करनेवाले कार्मिकों का स्वागत करता है एवं आपके सफल एवं सुखद करियर की कामना करता है। सभी पदोन्नत हुए कार्मिकों को **"आँचल"** परिवार बधाई देता है एवं भविष्य में ऐसे कई पदोन्नतियों की कामना करता है। **"आँचल"** परिवार सभी स्थानान्तरित कार्मिकों को उनके नए कार्यक्षेत्र और कार्यालय के सफल सेवाकाल के लिए शुभकामनाएँ देता है। **"आँचल"** परिवार सभी सेवानिवृत्त कार्मिकों को उनके सेवानिवृत्त जीवन में अच्छे स्वास्थ्य एवं खुशहाली के लिए शुभकामनाएँ देता है।

श्रद्धांजलि

श्री वी. एस. के. नम्बूदिरी

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई के पूर्व निदेशक (प्रशासन) श्री वी.एस.के. नम्बूदिरी 31 जुलाई 2022 को सेवानिवृत्ति के पश्चात अपने गृहनगर एर्नाकुलम, केरल में रह रहे थे। विगत 02 जनवरी 2023 को हृदयगति रुक जाने के कारण वे हमारे बीच नहीं रहे। यह कार्यालय शोक-संतप्त परिवार के प्रति गहरी सहानुभूति प्रकट करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान दें।

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥

- श्रीमद्भगवद्गीता अध्याय 2 श्लोक 20॥

अँचल